



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 के दौरान  
आयोजित बच्चों के कविता आवृत्ति  
प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 के दौरान  
आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता का  
एक दृश्य।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 के दौरान  
आयोजित सौदा-टिप्पणी प्रतियोगिता में  
भाग लेते हुए प्रतिभागी।



# लोहित

वार्षिक गृह पत्रिका :: तेरहवाँ अंक :: 2014



प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय  
एवं

महालेखाकार (लेखा परीक्षा) का कार्यालय, असम  
बेलतला, गुवाहाटी - 781029





अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2014 के उद्घाटन समारोह के दौरान स्वागत भाषण देते हुए श्री शांतनु बासु, प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), असम।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2014 के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते हुए महिला अधिकारियों/कर्मचारियों का एक दृश्य।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2014 के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते हुए अधिकारीगण तथा अन्य दर्शक।



प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम में आयोजित हिन्दी कार्यशाला, 2014 में कक्षा लेते हुए अतिथि हिन्दी अधिकारी का एक दृश्य।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2014 के उद्घाटन समारोह के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों का एक दृश्य।

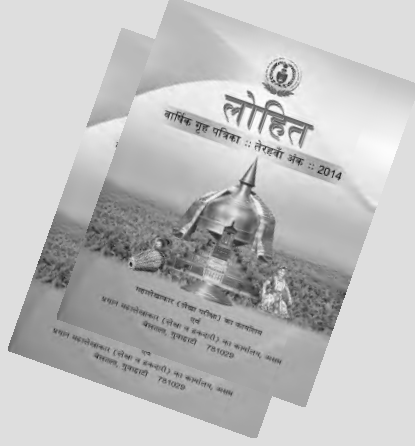


प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम में आयोजित हिन्दी कार्यशाला, 2014 का एक दृश्य।



# लोहित

वार्षिक गृह पत्रिका : : तेरहवाँ अंक : : वर्ष 2014



प्रकाशक :

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी ) का कार्यालय  
एवं  
महालेखाकार (लेखा परीक्षा) का कार्यालय, असम,  
बेलतला, गुवाहाटी – 781029

मूल्य:

राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख्यपृष्ठ डिजाइन

श्री पद्माकुमार दास, स.ले.प.अ.

# पत्रिका परिवार

संरक्षक : श्री शांतनु बाबु  
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम  
श्री सी.एच.खारशिंह  
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम

परामर्शदाता : श्री अमिताभ प्रसाद  
वरि. उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम  
श्री बी. बसुमतादी  
उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम

मुख्य संपादक : श्री सत्यव्रत धर  
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)  
श्री अरुण कुमार पाल  
लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

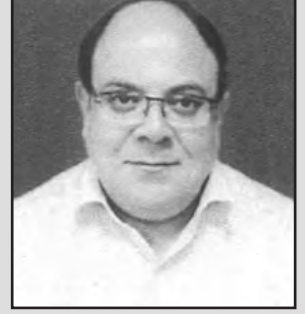
सह संपादक : श्रीमती हेमा बायन  
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक (ले. व हक.)  
श्रीमती मौसमी चौधरी  
वरि. हिन्दी अनुवादक (ले.प.)  
श्री विकास भौमिक  
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (ले.प.)  
श्री अरुण कुमार  
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (ले.प.)  
सुश्री पूजा सिंह  
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (ले. व हक.)  
सुश्री प्रियंका बी. गोस्वामी  
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (ले. व हक.)

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।





सत्यमेव जयते



## संदेश

वर्ष 2014 में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर गृह पत्रिका "लोहित" के प्रकाशित होकर निकलने से मुझे अपार खुशी मिली है। "लोहित" पत्रिका हमारे कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रति सभी की दृष्टि आकर्षित कर रही है।

हिंदी भाषा हमारे कार्यालय में कार्यरत विभिन्न लोगों के बीच एकता स्थापित करती आयी है। "लोहित" पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख सरल, सुबोध एवं ज्ञानवर्धक है। हमारी पत्रिका "लोहित" के माध्यम से हमारे कार्यालय के कई प्रतिभावान लेखकों को अपने विचारों को प्रकट करने का मौका मिला है।

आशा है आपको यह पत्रिका पसंद आएगी एवं भविष्य में भी आप लोग अपनी-अपनी रचनाएँ दे कर हमें उत्साहित करेंगे। राजभाषा हिंदी के वास्तविक प्रचार-प्रसार को बढ़ाकर देश की भाषिक एकता को मजबूत बनाने में निश्चय ही यह पत्रिका "लोहित" एक दिन कारगर सिद्ध होगी।

जय हिन्द ।

525. बासु

( शांतनु बासु )

प्रधान महालेखाकार ( ले व ह ) असम





सत्यमेव जयते

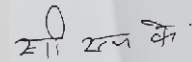


## संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), असम द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "लोहित" का तेरहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार – प्रसार में यह पत्रिका अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मैं पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों, पाठकों, लेखकों, सम्पादन सहयोगियों को इसके सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ। "लोहित" पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका नए कीर्तिमान स्थापित करने के पथ पर सदैव अग्रसर रहेगी और कार्यालय में हिन्दी के प्रचार- प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी।

जय हिन्द।



( सी.एच. खारशिंग )

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

असम, गुवाहाटी





सत्यमेव जयते



## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं महालेखाकार (लेखा परीक्षा) दोनों कार्यालयों द्वारा वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "लोहित" का तेरहवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है ।

इस कार्यालय में मेरी पहली पदस्थापना है एवं यहाँ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता को देखकर मुझे अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है ।

अतः इस पावन अवसर पर "लोहित" पत्रिका के सफल प्रकाशन में संलग्न समस्त सदस्यों को बधाई तथा योगदानकर्ताओं को शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ ।

जय हिन्द ।

( अमिताभ प्रसाद )

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन व जी. एस.)  
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.), असम, गुवाहाटी



सत्यमेव जयते



## संदेश

हर वर्ष "लोहित" पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए काफी लाभदायक सिद्ध हुआ है। "लोहित" पत्रिका के 13वें अंक के प्रकाशन को आप के समक्ष अर्पित करते हुए मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही है।

हम सभी क्षेत्रों या प्रदेशों की अपनी-अपनी भाषाओं एवं अस्तित्व का महत्व स्वीकार करते हैं। फिर भी, समूचे राष्ट्र में पारस्परिक संपर्क, आदान-प्रदान, विचार-विमर्श, संचार-संवाद और राष्ट्रीय स्तर पर पत्राचार आदि के लिए किसी एक संपर्क भाषा का होना आवश्यक है। इसके लिए भारत के सभी अग्रणी विचारक, शिक्षाविद और राजनितिज्ञ ने हिंदी को ही भारत की एकमात्र सर्वसक्षम भाषा माना है।

इसलिए हमारा यह प्रयास रहा है कि "लोहित" पत्रिका के माध्यम से हिंदी प्रगति के पथ पर अग्रसर हो एवं हमारे दोनों ही कार्यालयों में एकता एवं भाईचारे की भावना का विकास हो।

आशा है "लोहित" पत्रिका आपको पसंद आएगी।

जय हिंद

बी. जी.

( श्री ब्रजेन डोले )

व.उपमहालेखाकार (लेखा, वी.एल.सी व जी.ई.)

प्रधान महालेखाकार (ले व ह) असम





सत्यमेव जयते



## संदेश

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम एवं महालेखाकार (लेखा परीक्षा) असम की हिंदी पत्रिका "लोहित" का प्रकाशन हमारे लिए बेहद गौरव एवं खुशी की बात है।

इस पत्रिका के संवर्धन के लिए आपके द्वारा प्रेषित रचनाएँ, कविताएँ आदि से इस बात का हर्ष होता है कि आप राजभाषा हिंदी के विकास के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। हमारा कार्यालय "ग" क्षेत्र में स्थित होते हुए भी इसका प्रकाशन प्रतिवर्ष होता आया है। यह हमारे लिए काफी हर्ष का विषय है।

मैं सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को बधाई देता हूँ।

जय हिंद

लं. पेगू

(श्री लंकेश्वर पेगू)

उपमहालेखाकार (पी व एफ)

प्रधान महालेखाकार (ले व ह) असम



सत्यमेव जयते



## संदेश

हमारा कार्यालय हर वर्ष राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए "लोहित" पत्रिका प्रकाशित करता आया है। अतः इस वर्ष 2014 भी पुनः संयुक्त रूप से प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम एवं महालेखाकार (लेखा परीक्षा) असम की ओर से "लोहित" पत्रिका का तेरहवां अंक प्रकाशित किया गया है।

हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो समूचे देश में आदान-प्रदान की भाषा बनी है। अहिंदी भाषी क्षेत्र में भी अनेक संत कवियों ने हिंदी में रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इन कवियों एवं नेताओं ने हिंदी के माध्यम से देश की एकता एवं अखण्डता को बनाए रखने के लिए अपने कई महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हमारा कार्यालय एक ऐसा संगठन है, जिसमें सभी जाति धर्म के लोग एक साथ कार्य करते हैं। "लोहित" पत्रिका के माध्यम से ही हमारे कर्मचारी एक दूसरे की भावनाओं एवं विचारों को जान सकते हैं।

हिंदी पखवाड़ा 2014 के पावन अवसर पर मैं पत्रिका के समस्त रचनाकारों एवं पत्रिका परिवार को अपनी आंतरिक धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

जय हिंद

( श्री भवेन बसुमतारी )

उपमहालेखाकार ( प्रशा. )

प्रधान महालेखाकार ( ले व ह ) असम





सत्यमेव जयते



## संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "लोहित" का तेरहवाँ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । यह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात है ।

"लोहित" पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों ,पाठकों एवं संपादकों को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

जय हिन्द ।

एस. राजा,  
( एस. राजा ) 25/8/14.

उप महालेखाकार (ई. एस.)

कार्यालय महालेखाकार (ले.प.),असम, गुवाहाटी



सत्यमेव जयते



## संदेश

इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका "लोहित" का तेरहवाँ अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है ।

हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार एवं प्रोत्साहन में "लोहित" पत्रिका का सराहनीय योगदान रहा है । मैं पाठकों से उम्मीद करता हूँ कि इस पत्रिका की हर रचना को उत्साहपूर्वक पढ़ेंगे और अपने अमूल्य विचारों से अवगत कराएँगे ।

मेरी कामना है कि भविष्य में भी यह पत्रिका और अधिक समृद्धिशाली होगी और इसके निरन्तर प्रकाशन से इस कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा ।

जय हिन्द ।

द.सू. शिरसाट  
( दत्तप्रसाद सू. शिरसाट )

उप महालेखाकार ( एस.एस. )

कार्यालय महालेखाकार ( ले.प. ), असम, गुवाहाटी



सत्यमेव जयते



## संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "लोहित" का तेरहवाँ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है । इससे कार्यालयों में हिंदी के प्रति निष्ठा की भावना जागृत होती है ।

मैं यह आशा करता हूँ कि "लोहित" पत्रिका कार्यालय के कर्मियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा देती रहेगी ।

पत्रिका के सफल एवं निरन्तर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

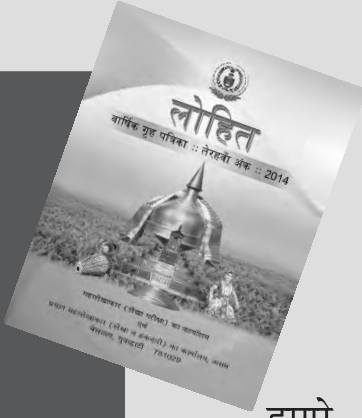
जय हिन्द ।

( एस. आर. लक्ष्मी नरसिंहा )

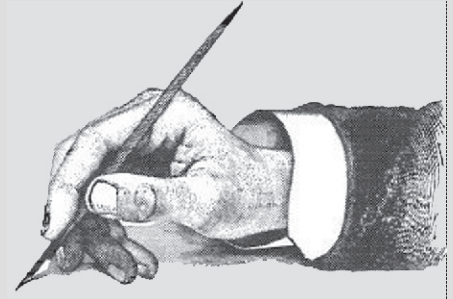
उप महालेखाकार ( आर. एस. )

कार्यालय महालेखाकार ( ले.प. ), असम, गुवाहाटी





हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "लोहित" के 13 वें अंक के प्रकाशन पर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। "लोहित" के इस अंक में सामान्य रुचि के विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ, कविताएँ आदि शामिल की गई हैं। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति तत्परता को प्रोत्साहित करके उनके बीच हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ाना ही हमारे पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।



हिन्दी भारत की संपर्क भाषा के साथ-साथ देश को एक सूत्र में बाँधने का महान कार्य करती आ रही है। अतः कार्यालय में इसके प्रचार-प्रसार में हमें हृदय से योगदान करना चाहिए। पत्रिका में रचनाओं का स्तर उत्कृष्ट रखने का भरसक प्रयास किया गया है, फिर भी इस संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं। मैं पाठकों, रचनाकारों और संपादक मंडल के सदस्यों को हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और हिन्दी के प्रति केन्द्रीय कार्यालयों में निष्ठा बढ़ती रहे ऐसी कामना करता हूँ।

अंत में सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को "लोहित" के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

आभार सहित धन्यवाद।

सम्पादक

## ● अनुक्रमणिका ●

|                                           |                       |    |
|-------------------------------------------|-----------------------|----|
| “लोहित” अवलोकन                            |                       | 1  |
| उड़ने को आसमान                            | मनिष भास्कर           | 2  |
| बेटियाँ                                   | प्रियंका              | 5  |
| हिन्दी है हम, वतन हैं हिन्दुस्तान हमारा   | राधिका देवी           | 6  |
| भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी    | हेमा बायन वैश्य       | 7  |
| महात्मा गाँधी                             | दीपक झा               | 9  |
| जल                                        | प्रिया दे             | 10 |
| किसान                                     | प्रतीक दयाल           | 11 |
| क्यों नारी सम्मान न पाती                  | कुमारी आभा            | 14 |
| हिन्दी की तुम डोर संभालो                  | विष्णु दे             | 16 |
| हस्ताक्षर एवं लिखावट-व्यक्तित्व की एक झलक | श्रीकान्त लाल         | 17 |
| माँ                                       | धीरेन्द्र प्रताप सिंह | 20 |
| पतंग                                      | रत्ना जोयारदार        | 21 |
| ऐतिहासिक नालन्दा की सैर                   | अमर जीत कुमार         | 22 |
| दोस्ती                                    | कौशल कुमार            | 25 |
| कोशिश करने वालों की                       | सौरभ कुमार            | 26 |

|                             |                       |    |
|-----------------------------|-----------------------|----|
| ताजा खबर                    | सुदीपा चक्रवर्ती      | 27 |
| हिंदी के अच्छे दिन लायेंगे  | गनेश शर्मा            | 28 |
| नाम बड़े, हस्ताक्षर छोटे    | अनिल कुमार झा         | 30 |
| बनूँ तो मैं क्या बनूँ       | रिमी हालोइ            | 32 |
| कष्ट से जीत की प्राप्ति     | प्रतिमा मजुमदार       | 33 |
| "ममता की आस"                | रंजीत गुप्ता          | 34 |
| माँ का प्यार                | प्रीति मणि दास        | 35 |
| जल का सदुपयोग               | प्रशान्त मलिक         | 36 |
| मानवता                      | नेहा गुप्ता           | 37 |
| मानव धर्म                   | नीहार लोध             | 38 |
| एक गाँव का बुढ़ा            | कुमारी देबोस्मिता राय | 39 |
| भगवान का वादा               | अनिता देवी            | 40 |
| ऊँची उड़ान मेरी पहचान       | फिरोज                 | 41 |
| प्रजातंत्र की दुर्दशा       | कुमार करुमेशम         | 42 |
| राष्ट्रभाषा का महत्व        | अनुष्का सरकार         | 43 |
| हिन्दी और हम                | पूजा छेत्री           | 44 |
| हालात                       | रिचा यादव             | 45 |
| मनुष्य- धर्म                | शम्भु कुमार नाथ       | 46 |
| जीयें तो कैसे जीयें         | अन्नेषा देब           | 47 |
| मिट्टी का खिलौना ( मनुष्य ) | संदीप ( द्वितीय )     | 48 |
| बहुत याद आती है             | चंद्रहास मनोज         | 49 |





## "लोहित" अवलोकन

"लोहित" के 12 वें अंक पर प्रतिक्रियाएँ

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका "लोहित" के 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका की सामग्री ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय है। सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मनोरंजन एवं लाभप्रद है, विशेषकर, श्री संदीप कुमार दास द्वारा रचित 'मानव प्रेम' तथा श्रीमती राधिका देवी द्वारा रचित 'बुढ़ापे का सहारा' अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाइयाँ।

( प्रधान महालेखाकार ( सा.सा.क्षे.ले.प. ) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम )

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "लोहित" की एक प्रति प्राप्त हुई। अतः आभार स्वीकार करें। "लोहित" पत्रिका आपके कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभा का आईना है। श्री विष्णु दे (महंगाई), श्री चन्द्रशेखर कुमार 'चंदन' (ऐसा ही बना रहे हमारा हिंदुस्तान), तथा कुमारी आभा (हिन्दुस्तानी है हम) की रचनाएँ विशेष रूप से प्रभावित करती है पत्रिका की साज-सज्जा भी उत्तम है।

एक श्रेष्ठ व सार्थक अंक के लिए संपादन मंडल तथा सभी रचनाकारों को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए "लोहित" परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

( कार्यालय महालेखाकार ( लेखापरीक्षा ), पंजाब )

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित "लोहित" गृह पत्रिका की एक प्रति पत्र संख्या:हि.अ2013-2014/हिंदी प/82 दिनांक 30.10.2013 के तहत सादर प्राप्त हुई। तदहेतु आभार। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल पठनीय हैं वरन् संग्रहनीय हैं। हिंदीतर क्षेत्र होते हुए भी राजभाषा हिंदी के उन्नयन में पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। संपादकीय लेख एवं संपादक मंडल को हृदय से साधुवाद देता हूँ। तुम, मेरा गाँव, शताब्दी की लज्जा, अच्छा लगता है, मेरा स्कूल, महंगाई, अंधेर नगरी चौपट राजा, मैं भ्रष्टाचार हूँ, समय, खामोशी (सभी कविताएँ) पढ़कर दिल को बहुत ही सकून मिला।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ एवं आशा भी करता हूँ कि इस अनुपम पत्रिका को अवश्य सम्मान प्राप्त होगा।

महालेखाकार का कार्यालय( लेखा एवं हकदारी ),तमिलनाडु-044-24324500

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "लोहित" अंक की पत्रिका प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

( महालेखाकार का कार्यालय ( लेखा एवं हकदारी ),त्रिपुरा-अगरतला-0381-2350054 )

आपके कार्यालय के पत्र संख्या स्था-1/लेप/हिप्र/6-3/2012-13/1824 दिनांक 29.10.2013 द्वारा "लोहित" पत्रिका के अंक 12वाँ वर्ष 2013 की प्राप्ति हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सुरुचिपूर्ण, सरस, तथा ज्ञानप्रद है। विशेष रूप से 'सुश्री रत्ना जोयारदार' (स.ले.प.अ.) की कविता "शताब्दी की लज्जा" तथा 'श्रीमती राधिका देवी, पत्नी-श्री गोरे बहादुर क्षेत्री' की लेख "बुढ़ापे का सहारा", 'श्री सुरेश चंद्र' (लेखापरीक्षक) का "बुद्धिमान कौन" एवं श्री विशाल कुमार (डी.ई.ओ.) की ज्ञानवर्धक जानकारी "क्या आप जानते हैं" सराहनीय है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाओं सहित।

( कार्यालय प्रधान महालेखाकार ( ले प )-1, महाराष्ट्र, मुंबई-400020 )



## उड़ने को आसमान

मनिष भास्कर, लेखा परीक्षक

आज हरिया दूर से उन उड़ती पतंगों को देख रहा है। देख रहा है हरिया पतंगबाजी में कटने वाली पतंगों को, जिसे लूटने बच्चे दौड़े जा रहे हैं, भागे जा रहे हैं लपकने को उन पतंगों को जो निरीह हुए जा रहे हैं। बच्चे एक बार फिर इन बेजान उड़ती पतंगों में जान डाल देंगे। दूर हवा में फिर इठलाएँगी ये पतंगें, पर हरिया.....।

अभी दस साल का अबोध बच्चा ही तो है हरिया पर परिस्थितियों ने उसे समय से पहले ही बड़ा बना दिया है। तीन वर्ष पहले वह चहकता था, फुदकता था, चेहरा भी उसका कितना दमकता था पर अब.....। हाथ से पतंग छीना, चेहरे से मुस्कुराहट, भगवान ने बापू को छीना और रोग ने माँ की आहट।

हरिया कैसे भूल सकता है वो दिन जब बाबा को लकड़ी के ढेर पर सुलाया गया था और जब बाबा गहरी नींद में थे तो उसके हाथों से ही वो पाप कराया गया था। धू- धूकर जलती चिता पर न जाने क्या देख रहा था हरिया। बाबा चिता से बाहर आ जैसे समझा रहे थे, "हरिया बेटा घर जा माँ और मुनिया को तो तूझे ही तो सम्भालना है।" उस नन्हें कंधे पर बाप ने सारा भार छोड़ दिया।

बड़ी भीड़ देखी थी हरिया ने आज। दूर-दूर से रिश्तेदार, पड़ोसी सब इकट्ठा हुए थे। सब माँ को दिलासा देते थे। मुनिया तो जैसे सबसे बेखबर बाहर रिश्तेदार के बच्चे संग खेल रही थी। हरिया थोड़ा सम्भला, देखने-सुनने वाले बहुत हैं। भविष्य उसे पूर्णतः अंधकारमय न लगा। चाचा ने झट से कहा था, हरिया तू हमारे साथ शहर चलेगा, वहीं पढ़ेगा और खूब बड़ा आदमी बनेगा।

धीरे - धीरे भीड़ छूटने लगी थी, हरिया के भी कपड़े रखे जा रहे थे वह भी माँ से दूर जाने वाला था। गाँव की हरियाली, माटी की गंध, पर्वत की तलहटी, नदी का वो किनारा सब छूटा जा रहा था और सामने आ रही थी मोटर गाड़ियों की कर्कश ध्वनि, उँची इमारतों का समन्दर.....।

शहर का यह घर मिट्टी का नहीं था यह तो मोटी दीवारों का बना था। दरवाजें वहाँ की तरह स्वच्छंद



नहीं, मोटे लोहे के बने थे । तीसरी मंजिल तक जाने के लिए लिफ्ट का उपयोग बिल्कुल नया था सब उसके लिए । मित्र के नाम पर यहाँ रमुआ, गोपिया कोई न था, एक बड़ा भाई बंटी और उसके कम्प्यूटर थे बस । जिन्दगी जैसे चार दिवारों के दो कमरों के बीच बँध गई थी । शुरु- शुरु में सब ठीक था पर धीरे-धीरे बात-बात पर तानें, डाँट बढ़ती जा रही थी । हरिया सब सह रहा था आखिर उसे बड़ा आदमी जो बनना था । चाह रहा था हरिया जब इस बार गाँव जाएगा तो हरी दूबों के बीच दौड़ेगा, खेतों की मंडेरों पर चौकड़ियाँ भरेगा, सारे दोस्त



मिलकर आम तोड़ेगें और जब रखवाला दौड़ाएगा तो छटपट भागेंगे, तेज दौड़ेगे सब..... । चाची की कुछ सहेलियाँ आई थी उस दिन । गोरे-गोरे गाल, राजसी वस्त्र, कितनी मोहक दिखती थी सब, पर नहीं दिखती थी तो बस माँ की ममता वाली वो आँखें । हरिया ही वहाँ पानी और शर्बत से भरी गिलासों लेकर आया था । मिसेज भटनागर की वो आवाज, बड़ा अच्छा नौकर लाई है, एक हमारे लिए भी मिल जाता..... । चाची ने कोई उत्तर न दिया पर उनका मौन ही हरिया को तार-तार कर गया । वो कहां बड़ा आदमी बनने आया था, पर यहाँ तो..... । उस रात बहुत रोया था वो । माँ आई थी सपने में उसे वापस गाँव बुला रही थी । हरिया ने चाचा से गाँव जाने की बात कही । आजकल करते - करते महीने गुजर गए और एक दिन फोन की घंटी घनघना उठी और पूरे परिवार के साथ हरिया वापस गाँव जा रहा था । देख रहा था उन गगनचुम्बी अट्टालिकाओं को, उन रबड़ जैसी सड़कों को, पों-पों करती गाड़ियों को, सब को विदा कर रहा था हरिया । सामने शुरु हो रही थी फसलों की लहलहाती खेतों, बैलों की घंटी रुन-झून, रुन-झून, रबड़ जैसी सड़कें नहीं थी तो क्या हुआ माटी की खूशबू तो थी ।

हरिया फिर चहक रहा था, गा रहा था, गुन-गुना रहा था, आखिर माँ के पास जो जा रहा था ..... । पर यह क्या ? घर के बाहर सन्नाटा कैसा ? माँ, माँ कहते वह घर के अंदर गया । माँ सोई थी । गहरी नींद में सोई थी । शायद कभी न जागने वाली नींद में । सोई माँ के चारो ओर लोग इकट्ठे थे । हरिया को बापू याद आ गए । एक बार फिर वही लकड़ियों का ढेर, वही आग पर इस बार लकड़ियों पर बापू नहीं माँ थी । वह और मुनिया देर रात तक रोते रहे, आकाश में उन असंख्य तारों के बीच माँ को तलाशते रहे । सवेरे चाची बोल रही थी मुनिया भी



चलेगी हमारे साथ । वह भी पढ़ेगी, बड़ी होगी, घोड़ी चढ़कर दूल्हा आएगा और वह पालकी में सजकर विदा होगी । मुनिया को सब अच्छा लग रहा था पर हरिया के कानों में मिसेज भटनागर की आवाज गूँज रही थी.....एक हमारे लिए भी मिल जाता तो ..... ।

हरिया नहीं चाहता था वापस उन बंद दीवारों के बीच जाना । डर था उसे कहीं मुनिया भी उसी की तरह कैद न हो जाए । कितनी अच्छी लगती थी मुनिया लाल फ्राक में, जो बाबा ने लाकर दिए थे । कितने फबते थे वो फीते जो मेले से हरिया ने खरीदे थे अपने लाडली मुनिया के लिए । ना, वह उसे शहर न जाने देगा । नहीं जाने देगा उन गोरे गालों ओर काले दिलों के बीच ।

यही सब सोचकर हरिया मुनिया को जगाता है, वो दोनों भाग खड़े होते हैं । दूर, बहुत दूर गाँव से दूर उन पगडंडियों से दूर । शाम होती है, रात होती है, घनघोर अँधेरे वाली रात, झींगुरों की झमझमाहट वाली रात पर वो आज डरते नहीं, बस भागते जाते हैं । वो भागना चाहते हैं इतनी दूर जहाँ दरिन्दों की गिद्ध नजर न पड़े । सुबह होती है, लाल सूरज वाली सुबह, चिड़ियों की चहचहाट वाली सुबह । आखिर थककर दोनों बैठें हैं नदी के किनारे ..... ।

हरिया इन पतंगों को देख रहा है और मुनिया इन्हें लूटने दौड़ रही है । हरिया सोच रहा है शायद उनकी जिन्दगी भी उन कटी पतंगों की तरह है जिन्हें लूटने वाले तो बहुत हैं पर कोई शायद ऐसा नहीं जो वापस इन नन्हीं पतंगों में जान डाल दे और बोले- उड़ो, जितना चाहे उड़ों । ♦

अपने जीवन को सेवा, संतोष, स्वाध्याय, सिमरन, सत्यता, पुरुषार्थ और सहृदयता के आभूषणों से सजा लीजिये । जीवन का सच्चा आनंद पाने के लिए उसे समय के किनारे पत्ते पर पड़ी ओस की भाँति हलके-हलके नाचने दो । जीवन एक इन्द्रधनुष की तरह है । आपको इसके रंगों को प्रस्तुत करने के लिए सूर्य और बारिश दोनों की जरूरत है । तैरते हुए बादल जब मेरे जीवन में प्रवेश करते हैं तो उनका उद्देश्य बारिश या तूफान नहीं होता बल्कि मेरे सूरज ढले हुए आसमान में रंग भरना होता है ।

रविन्द्रनाथ टैगोर





## बेटियाँ

प्रियंका , डाटा एंट्री ऑपरेटर ( ले. व हक. )

प्यार की सजीव कहानियाँ होती हैं, बेटियाँ  
 माँ बाप की आँखों का तारा होती हैं, बेटियाँ  
 गुजरता है बचपन रफ्तार से इनका  
 पल भर में सयानी होती है, बेटियाँ  
 नूर से इनके रोशन घर का हर कोना  
 चाँद से भी ज्यादा नूरानी होती है बेटियाँ  
 हर दुख जहाँ का बना इन्हीं के लिए  
 गमों की भी रानी होती हैं, बेटियाँ  
 सब कुछ है मगर कुछ भी नहीं इनका  
 किस्मत की भी विरानी होती है, बेटियाँ  
 ओंस की एक बूंद सी होती है, बेटियाँ  
 स्पर्श खुरदरा हो तो रोती हैं, बेटियाँ  
 रोशन करेगा बेटा एक कुल को  
 दो-दो कुलों की लाज ढोती है, बेटियाँ  
 कोई नहीं दोस्तों एक दूसरे से कम  
 हीरा अगर है बेटा तो मोती है, बेटियाँ  
 विधि का विधान है यहीं दुनिया की है रीत  
 मुट्ठी में भरे नीर सी होती है, बेटियाँ  
 बोए जाते हैं बेटे उग जाती हैं, बेटियाँ  
 खाद पानी बेटों को, पर लहराती हैं बेटियाँ  
 एवरेस्ट पर भेजे जाते हैं बेटे, चढ़ जाती हैं बेटियाँ  
 रोते हैं बेटे हसाँती हैं बेटियाँ  
 कई तरह से गिराते हैं बेटे, पर संभालती हैं बेटियाँ  
 पढ़ाए जाते हैं बेटे, सफलता पाती हैं बेटियाँ  
 यूँ ही डरते हैं बेटियों से, घर को सम्मान देती हैं बेटियाँ  
 हसरतें पालते हैं बेटे, पर पूरा करती हैं बेटियाँ  
 कुछ भी कहे सबसे अच्छी हैं, बेटियाँ  
 कुछ भी कहे सबसे अच्छी हैं, बेटियाँ ♦



## हिन्दी है हम, वतन हैं हिन्दुस्तौं हमारा

राधिका देवी

पति:-गोरे बहादुर क्षेत्री, रिकार्ड कीपर ( ले.प. )

जो भरा नहीं है भावों से,  
बहती जिसमें रसदार नहीं  
वो हृदय नहीं, वो पत्थर है,  
जिसमें हिन्दी के लिए प्यार नहीं ।

संस्कृत की एक लाडली बेटी है ये हिन्दी,  
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी ॥  
यू तो देश की कई भाषाएं और है ,  
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी ॥

तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है ,  
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी ॥  
पाथेय है, प्रवास है, परिचय का सूत्र है,  
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी ॥

सुंदर , सरल और सहज हमारी भाषा हिन्दी,  
भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता है हिन्दी ॥♦



जीवन एक विदेशी भाषा की तरह है जिसे सब लोग नहीं समझ पाते हैं/ क्रिस्टोफर मिरले

जीवन दो चीजों का नाम है, एक जमी हुई नदी और दूसरी धधकती  
हुई ज्वाला/ धधकती हुई ज्वाला ही प्रेम है/

खलील जिब्रान



## भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी

हेमा बायन वैश्य, व.हिन्दी अनुवादक

आज भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में नई-नई प्रेरणाएँ, परिकल्पनाएँ और दिशाएँ, देश, समाज और उसकी अभिव्यक्तियों को आंदोलन कर रही हैं। भूमण्डलीकरण सारे संसार में एक नई आर्थिक-सामाजिक स्थिति की परिकल्पना लेकर आई है। भूमण्डलीकरण के बिना हम समूचे विश्व के साथ ताल से ताल मिला कर नहीं चल सकते, विकास की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकते हैं। हमारे देश के आर्थिक व्यवस्था से लेकर भाषा-संस्कृति तक भूमण्डलीकरण के अभिलक्षणों का प्रभाव नजर आ रहा है। हिंदी भाषा की नई दिशाओं पर भी इसका सीधा प्रभाव लक्षित होता है।

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में मुक्त बाजार व्यवस्था का सिद्धांत उपभोक्ता की सर्वोच्चता का नारा देता है। इस उपभोक्ता वादी संस्कृति में भाषा और साहित्य का मूल्यांकन भी उनकी उपयोगिता की दृष्टि से होने लगा है। हिंदी भाषा के प्रयोजन मूलक स्वरूप का विस्तार साक्षी है कि यह भाषा अब पहले जैसी नहीं रह गई। हिंदी की शब्दावली, अर्थ क्षमता और प्रयोजनीयता पिछले कुछ वर्षों में अप्रत्याशित रूप से बदल गई है। जनसंचार के संसाधनों में आई तकनीकी समृद्धि का प्रभाव हिंदी भाषा पर भी पड़ा है। रेडियों, टी.वी, कम्प्यूटर, इंटरनेट और पत्रकारिता के अत्याधुनिक तकनीकों से आज हिंदी जुड़ी हुई है। विश्वबाजार विज्ञापन के भरोसे चलता है और हिंदी का सूचना-संसार भी विज्ञापन की महिमा से ओतप्रोत है। इंडिया डुडे, जैसी पत्रिका भूमण्डलीकरण का प्रसार कर रही हैं।

आज का हिंदी साहित्य क्रांति, सैटेलाइट क्रांति, डिजिटल क्रांति के संपर्क से भूमण्डलीकरण की व्यापकता का लाभ उठा रहा है। आज संसार की किसी भी भाषा में प्रकाशित लोकप्रिय कृतियाँ तत्काल अनुदित होकर हिंदी पाठकों के सामने आ जाती है।

आज भारत में बहुराष्ट्रीय उत्पादन का विज्ञापन हिंदी माध्यम में हो रहा है। हिंदी आम जन-सामान्य उपभोक्ता की भाषा है। सौदा तय करने की भाषा है। लेन-देन का माध्यम बन गयी है। भूमण्डलीकरण का प्रभाव



प्रस्तुत नीतियों के परिवर्तन में परिलक्षित प्रतीत होता है-

- |                             |                       |
|-----------------------------|-----------------------|
| 1. विदेशा व्यापार नीति ।    | 2. औद्योगिक नीति ।    |
| 3. सार्वजनिक क्षेत्र नीति । | 4. उत्पादनकारक नीति । |
| 5. प्रशासित मूल्य नीति ।    | 6. तटकर नीति ।        |
| 7. सेवा एवं पेटेंट नीति ।   |                       |

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा के प्रसार एवं विकास की बड़ी संभावनाएँ हैं। भारतीयता को आगे बढ़ाने का अवसर है क्योंकि भाषा केवल विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, यह देश की अस्मिता की पहचान है। अपनेपन और आत्मीयता का बोध कराती है।

मानवी संबंधों के विकास में तीन तत्व महत्वपूर्ण होते हैं- संचार, सहयोग तथा स्पर्धा। आज हमें स्वीकार करना ही होगा कि भूमण्डलीकरण एक सच्चाई है, हमें पसंद हो या नापसंद, स्वीकार्य हो या अस्वीकार्य।

आज की हिंदी वह नहीं रही है जो पहले थी। बदलती परिस्थितियों में उसने अपने को परिवर्तित किया है। इंटरनेट पर हिंदी की वेबसाइटों में परियोजनाएँ आरंभ की हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की क्षेत्र की कई कंपनियों ने हिंदी भाषा में परियोजनाएँ आरंभ की हैं। माइक्रोसाफ्ट ने ऑफिस हिंदी के द्वारा भारतीयों के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग आसान कर दिया है।

अमेरिका के राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की है कि हिंदी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21 वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए। निश्चिततः भूमण्डलीकरण के दौर में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र और सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार की भाषा हिंदी को नजरअंदाज करना अब संभव नहीं रहा। प्रतिष्ठित अंग्रेजी प्रकाशन समूहों ने हिंदी में आज अपने प्रकाशन आरंभ किए हैं। बी.बी.सी, स्टार प्लस, सोनी, जी.टी.वी, डिस्कवरी आदि अनेक चैनलों ने हिंदी में अपने प्रसारण आरंभ कर दिए हैं। निश्चितः इससे हिंदी भाषा को एक नवीन प्रतिष्ठा मिली है तथा देश को अधिक समृद्ध बनाने में आगे भी मिलेगी। ♦





## महात्मा गाँधी

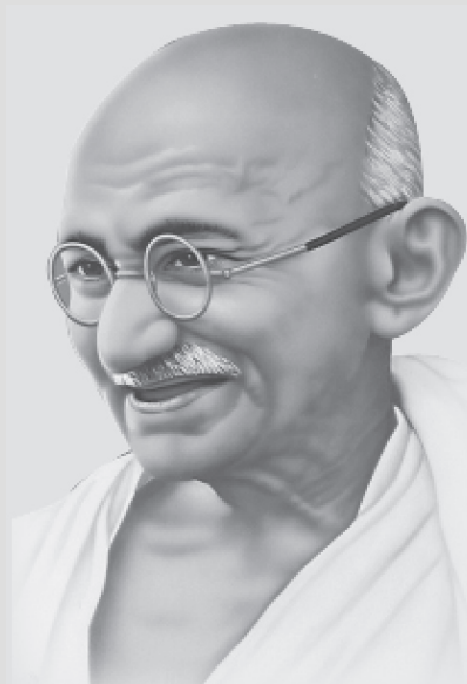
दीपक झा, लेखा परीक्षक

सत्य के दूत थे,  
भारत को आजाद कराने आए थे ,  
महाभारत के देश में अहिंसा को जिताने आए थे,  
सत्य के दूत थे,  
भारत को आजाद कराने आए थे ॥

अछूतों को देवजन बनाया,  
सबसे आगे उन्हें बताया,  
उनका भी हाँ मान बढ़ाया ॥  
अंग्रेजों को नाँच नचाया,  
वायुयान के युग में,  
लाठी को जिताने आए थे ,  
सत्य के दूत थे  
भारत को आजाद कराने आए थे ।

धोती पहन के निकले थे,  
लाठी थाम के चलते थे ॥  
अंग्रेजों से नहीं डरते थे,  
भारत पर वो मरते थे ॥  
यंग इंडिया में लिखते लेख थे ,  
सत्य के दूत थे,  
भारत को आजाद कराने आए थे ॥

मोहन था नाम उनका ,  
मन को थे मोहते ॥  
सदा सबका भला थे सोचते,  
हिंसा को थे रोकते ॥



गोखले के शिष्य थे,  
सत्य के दूत थे,  
भारत को आजाद कराने आए थे ॥

लंदन में पढ़े थे,  
अफ्रीका में भी लड़े थे ॥  
ट्रेन से फेंके गए थे ,  
फिर भी नहीं थके थे ॥  
त्याग की मूर्ति थे ,  
करते सबकी इच्छा पूर्ति थे  
राम के भक्त थे ,  
सत्य के दूत थे,  
भारत को आजाद कराने आए थे ॥ ♦



## जल

प्रिया दे,  
सुपुत्री :-विष्णु दे, वरि. लेखापरीक्षक

जल ही जीवन का आधार है,  
जल से होता सबको प्यार है ।  
जल बिन होता न कुछ काम,  
जल के लिए आज होते अनेक संग्राम ।

जल बिन चारों ओर हाहाकार है,  
जल रंग- विहीन है, निराकार है ।  
जल को नष्ट करने का सार,  
जल का आज होता है व्यापार ।

तीन- चौथाई भाग है जल का,  
एक- चौथाई भाग है थल का,  
जल की आज कमी धरा पर,  
जीवन हमारा इसी पर निर्भर ।

जल के महत्व को तुम जानों,  
जल है जीवन यह तुम मानों,  
इसकी अपार उपयोग तुम पाओ,  
लेकिन जरा न व्यर्थ गंवाओं ।♦





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 – 'उद्घाटन समारोह',  
दिनांक 01.09.2014 ।

प्रधान महालेखाकार ( ले.व.हक. ) एवं महालेखाकार  
( ले.प. ) द्वारा दीप प्रज्वलन ।



युगल गीत प्रस्तुत करते हुए प्रधान महालेखाकार  
( ले.व.हक. ) के कर्मचारीगण ।





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा- 2014 - 'उद्घाटन समारोह'  
का आनंद उठाते हुए अधिकारीगण ।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह'  
का आनंद उठाते हुए अधिकारी /कर्मचारीगण ।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह' में  
एकल गीत प्रस्तुत करते हुए श्री सुभेन्दु दास, व.  
लेखाकार( ले.व.हक. ) ।





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह' में अपने विचार प्रकट करते हुए प्रधान महालेखाकार ( ले.व हक. ) ।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह' में अपने विचार प्रकट करते हुए महालेखाकार ( लेखापरीक्षा ) ।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 - 'उद्घाटन समारोह' के दौरान वृंदगान प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण ।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 - 'उद्घाटन समारोह'  
का संचालन करती हुई सुश्री प्रियंका बी.गोस्वामी,  
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, ( ले.व हक. )

प्रधान महालेखाकार ( लेखा व हकदारी ) असम में  
आयोजित हिन्दी कार्यशाला, 2014 में भाग लेते हुए  
कर्मचारियों का दृश्य।



प्रधान महालेखाकार ( लेखा व हकदारी ) असम में  
आयोजित हिन्दी कार्यशाला, 2014 में कक्षा लेते  
हुए अतिथि हिन्दी अधिकारी।



## किसान

प्रतीक ढ्याल, लेखा परीक्षक

किसान अर्थात जो कर्म करे, शान से रहे और जिसमें नम्रता हो। पर बदलते परिवेश में किसान आज हाशिये पर है। प्रगति की अन्धाधुन्ध दौड़ में, औद्योगिकरण की आड़ में, धरती की गोद को हरियाली से सजाने वाले किसानों को बड़ी ही बेरहमी से बेचारा बना दिया गया है। प्रस्तुत कहानी एक ऐसे ही किसान की है, जिन्होंने कर्म करके शान से रहते हुए, बड़ा ही नम्रता से अपने सभी कर्तव्यों का निर्वाह किया है और कृषि के आधार पर परिश्रम के बल पर सारी चुनौतियों का सामना किया है।

चन्दर तड़के सुबह ही भीगी चने मुट्ठी में लिए, चबाते हुए अपने बैलों की शैले से लगा के, कंधे पे हल रख कर खेत की ओर बढ़ लिया। खेत पहुँचकर बैलों के मुँह पर जाबे लगाकर वह हल को शैले से जोड़कर जुताई शुरू करता है। मन हीं मन सोचता है कि हे भगवान इस बार फसल अच्छी हो जाए तो जमीन्दार का बाकी का कर्ज भी चुका दिया जाए, जो कि वह तब लिया था जब उसकी पत्नी विमला की तबीयत सूरज के पैदा होने के बाद खराब हुई थी। चन्दर याद कर रहा है कि किस तरह से वह जिले के सरकारी अस्पताल में पत्नी के बगल में बैठे रात भर जगता रहा था। वैसे तो अस्पताल



में दवाईयाँ मुफ्त मिलती थी पर सारी दवाईयाँ वहाँ उपलब्ध न थी, इसलिए कुछ दवाईयाँ बाहर से लेनी पड़ती थी जिनके लिए उसे जमीन्दार से उधार लेना पड़ गया था। धीरे-धीरे धूप तेज होने लगी और चन्दर पसीने से तर होने लगा। बीच-बीच में आती हवा के झोकों से उसे सुकून मिलता। चन्दर की थकान बढ़ने लगी, उसका मन था कि वह अब रुक जाए, थोड़ी देर आराम कर ले, पर फसल बोने के दिन निकल जा रहे थे, जमीन्दार का कर्ज, सूरज की पढ़ाई का कर्ज और इस महँगाई में परिवार का खर्च, ये बातें उसके जेहन में आती रही और उसके कदम चलते रहे। प्यास से उसका गला सुखता जा रहा था तभी उसने राहत की साँस ली, विमला जो खर-मेटाव लेकर आ गई थी, रोटी-आचार, प्याज के टुकड़े, पानी। चन्दर बैलों को लगाकर, मुँह धोकर खर-मेटाव करने लगा। विमला ने बताया कि जमीन्दार फिर से कर्ज के तकाजे के लिए घर आया था, और सूरज को बड़ी मुश्किल से स्कूल भेजा है क्योंकि उसके कक्षाध्यापक उसे बार-बार बाकी फीस के लिए उसे डाँटते रहते हैं जिससे वह स्कूल जाने से कतराता रहता है। चन्दर सारी बातों को चुपचाप सुनता रहा। रोटी खा के पानी पीने से उसकी कुछ थकान कम हुई। आखिरी रोटी के दो टुकड़े कर दोनों बैलों को खिलाकर फिर से काम पर लग जाता है। दोपहर को वापस घर जाने पर वह जमीन्दार के यहाँ जाके, बड़ी मित्रों के बाद उसे फसल के बाद कर्ज चुकाने का वचन देके स्कूल जाता है, और प्रधानाध्यापक से निवेदन करता है कि सूरज की फीस फसल के बाद जमा करने की मोहलत मिल जाये। प्रधानाध्यापक चन्दर की बात मान जाते हैं।

शाम को वह फिर खेत जाके बीज और उर्वरक डालता है और अगले दिन बैलों को हेंगी से लगाकर खेत को समतल करता है।

जिन दिनों खेतों का काम कम चल रहा होता है तो वह महात्मा गाँधी रोजगार योजना के तहत मजदूरी भी कर लिया करता है। फसल उगने के बाद उनकी कोमल पत्तियाँ नील गायों को बहुत लुभाती थी। दिन के वक्त तो आस-पास के खेतों के लोग, कोई न कोई फसल देखने पहुँच ही जाता था, पर रात के वक्त चन्दर को खेत में ही खाट डाल के सोना पड़ता था, तारों जड़ी चादर के नीचे वह सोता कम, सोचता रहता अपने हालात के बारे में और रात भर में चार बार उठ-उठ के खेत के चक्कर लगाया करता था।

एक दिन शाम को जब वह मजदूरी कर ही रहा था कि सूरज उसके पास दौड़ता हुआ आया और बताया नहर में पानी बढ़ जाने से उसके खेत में खूब पानी आने लगा है।

चन्दर फावड़ा फेंक खेत की ओर भागता है। वैसे पानी तो फसल के लिए वरदान है, पानी के बिना फसल तो असम्भव है पर यदि असमय खेत पानी से डूब गया तो सारी फसल बरबाद हो जानी थी। चन्दर खेत पहुँचकर बाड़ लगाने की कोशिश करता है, पर पानी के तेज बहाव से बार बार मिट्टी बह जाती है, धीरे-धीरे अँधेरा बढ़ने लगा और चन्दर की कोशिश नाकाम होती गई। चन्दर थक चुका था, पास की मिट्टी इतनी गिली हो गई थी कि अब बाड़ लगा पाना मुश्किल लग रहा था, चन्दर के आँखों के सामने ही उसकी फसल डूबने को थी। जमीन्दार का कर्ज, सूरज की फीस और सबसे अधिक अपनी दी हुई जुबान चन्दर को बार-बार कोशिश करने पर मजबूर





कर रहे थे। आखिर कोई उपाय न मिलता देख चन्दर खुद ही पानी के मुहाने पर लेट गया। अब खेत में पानी जाना बन्द हो गया था पर चन्दर के हटते ही फिर से खेत में पानी जाने लगता। चन्दर वहीं पड़ा रहा, आज फिर तारों जड़ी नीली चादर के नीचे, ठंडे पानी से भीगा हुआ वह पड़ा रहा रात भर, नीन्द के आगोश में हल्की झपकी ही ली थी उसने, कि भोर हो गया, सारे पड़ोसी किसानों को बुलाकर विमला, सूरज के साथ खेत पहुँची, सबने मिल के बाढ़ लगाया और चन्दर को कंधे पर उठा कर घर लाए। रात भर पानी में रह जाने से चन्दर को तेज बुखार हो गया था। विमला ने चन्दर के तलवों पर तेल की मालिश की, सर पर बार-बार भीगी पट्टियाँ करती रही और काढ़ा बना के पिलाती रही। सूरज पास के डॉक्टर को बुला कर लाया और दवाईयाँ दी गई। कुछ तीन-चार



दिन ही हुए जब चन्दर काम पर वापस जाने लगा, हाँलाकि कमजोरी अब भी थी, पर मजदूरी ना करता तो फिर जमीन्दार का कर्ज और सूरज की फीस दोनों पूरे ना कर पाता।

चन्दर फसल देखने खेत पहुँचा। इस बार अच्छी फसल लहलहाई थी। मध्यम-मध्यम हवा के झोकों में लहराती हुई हरी फसल बार-बार उसे ताजा करती और उसे उम्मीद देती कि इस बार वो कर्ज से मुक्ति पा लेगा।

अब चन्दर दिन ढलते ही सूरज के साथ किताबें लेकर बैठ जाता, सूरज से पढ़ाई की बातें करता और उसे खूब मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित करता। हालाँकि हिन्दी के अलावा किसी विषय में वह सूरज की मदद नहीं कर पाता, फिर भी वह सूरज की पढ़ाई पर पूरी नजर रखता था। हिन्दी में पद्यों की व्याख्या तो वह स्कूल के अध्यापक से भी अच्छा करता था।

इस बार पैदावार अच्छी हुई और सरकार के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि करने के कारण चन्दर अपने उगे अनाज का एक बड़ा हिस्सा सरकार द्वारा निर्धारित विक्रय केन्द्र पर बेच देता है। लगे हाथ वह जमीन्दार का कर्ज चुका के, स्कूल पहुँचता है और सूरज की पूरे साल की फीस जमा करता है। फिर बाजार से घर के लिए आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी कर घर लौटता है। विमला कर्ज अदा होने की सारी बातें सुन के राहत की साँस लेती है।

कुछ ही दिन बाद सूरज कुदता उछलता हुआ आता है, चन्दर और विमला से नई स्कूल ड्रेस और बैग की फरमाईश करता है और एक पन्ना चन्दर को थमाता है, पहली बार खर्च की आहट के बावजूद चन्दर के चेहरे पर मुस्कान है और आँखों में खुशी की चमक, आखिर सूरज कक्षा में प्रथम जो आया है इस बार। ♦

## क्यों नारी सम्मान न पाती

कुमारी आभा ,व. लेखाकार

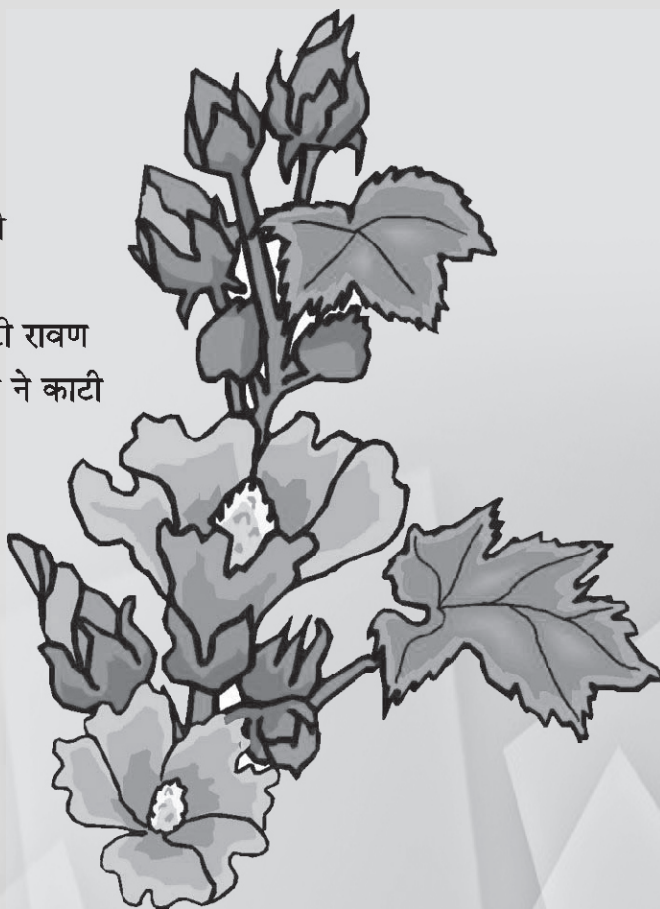
युग-युग से स्वयं को निरंतर जलाती  
कमल नयनों से आसु बहाती  
मानव मात्र की जन्मदात्री  
क्यों नारी सम्मान न पाती

तन दिया, आत्मा दी, दुध और  
नौ माह सींचा रक्त से  
दे दिया सब कुछ, किसी कर्ण की भांति  
क्यों नारी सम्मान न पाती

गौ माता पूजनीय है,  
जन्मभूमि आँगन की शोभा बढ़ाती  
फिर मनुष्य क्यों ऐसी जाति  
जिसमें नारी सम्मान न पाती

गौतम ने अहिल्या को फटकारी  
राम ने सीता को त्यागा  
छल इन्द्र का था और था कपटी रावण  
फिर सजा क्यों अहिल्या-सीता ने काटी  
बात कुछ समझ न आती  
क्यों नारी सम्मान न पाती

जुआ खेला पांडवों ने  
दांव लगाया पांचाली को  
भरी सभा देखती रही  
और पाँच पतियों के रहते  
द्रोपदी बस चीखती रही  
क्यों है पुरखों की ऐसी थाती  
जहाँ नारी सम्मान न पाती



नारी के आँचल में दाग लगाए जो  
जीते हैं शान से, सिर उठा के  
बेकसूर है जो, पीड़ित-नारी  
क्यों कलंकिनी कहलाती  
प्रश्न यही हृदय में बाकी  
क्यों नारी सम्मान न पाती

पिता का आँगन छोड़  
पति के घर  
लाख दुःखों पर भी  
सुखी संसार बसाती

उस नारी का मोल क्या है  
चंद रूप्यों से भी कम है  
अगर नहीं, तो क्यों लौटते बाराती  
या कोई बहु दहेज के लिए जला दी जाती  
भ्रुण हत्या से उजड़ी कोख है पूछती  
मानव मात्र की जन्मदात्री  
क्यों नारी सम्मान न पाती ♦

बूंद की सार्थकता इसी में है कि उसका अस्तित्व नदी में विलीन हो जाए। -

अल गजाली

जीवन निकुंज में तुम्हारी रागिनी बजती रहे, सदा बजती रहे। हृदय कमल में तुम्हारा आसन विराजित रहे, सदा विराजित रहे। -

रविन्द्र नाथ टैगोर

खाने और सोने का नाम जीवन नहीं। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ने का। -

प्रेमचंद

जीना भी एक कला है, बल्कि कला ही नहीं तपस्या है। -

हजारी प्रसाद द्विवेदी

जीवन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नहीं। -

जवाहरलाल नेहरू

मौत जब तक नजर नहीं आती।

जिन्दगी राह पर नहीं आती।। -

जिगर



## हिन्दी की तुम डोर संभालो

विष्णु दे, वरि. लेखापरीक्षक

जागो ! देश के कर्णधारों,  
हिंदी की तुम डोर संभालो,  
कृष्ण सरीखे बनकर तुम,  
हिंदी रूपी रथ को हांको ।

संस्कृत है हिंदी की जननी,  
इस माँ को तुम पहचानों,  
माँ का पूजन अर्चन करके,  
हिंदी बेटी को तुम जानो ।

गले लगाया हिंदी को तो,  
विघ्न बाधाएँ कितनी झेली,  
थोपी गई हमपें अंग्रेजी,  
और गुलामी देश की फैली ।

हिंदी को अपनाने से ही,  
देश का स्वाभिमान जगेगा,  
उन्नत होगा राष्ट्र हमारा,  
वैभवशाली तभी बनेगा ।

संतो ने भी इस धरती पर,  
हिंदी का प्रचार किया,  
अपनी कृतियों द्वारा ही,  
हिंदी का प्रसार किया ।

थोपी गई भाषा पर हमें ,  
आज इतरान मंजूर नहीं,  
देश स्वालम्बी तब कहलाएगा,  
जब हिंदी सबको जगाएगा ।♦





## हस्ताक्षर एवं लिखावट-व्यक्तित्व की एक झलक

श्रीकान्त लाल,  
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

लिखावट व्यक्तित्व की पहचान है। इससे व्यक्ति के अंदर झाँका और उसकी विशेषताओं को देखा जा सकता है। लिखावट को अंतःकरण की अभिव्यक्ति भी माना जाता है। इसमें हमारे मनोभाव छिपे होते हैं। विशेषज्ञ इन भावों को शब्दों की आड़ी-तिरछी रेखाओं में खोजते हैं और व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हैं। विशेषज्ञ निम्नलिखित तरीकों के आधार पर विश्लेषण करते हैं—

- (1) मूवमेन्ट- इसमें कलम का हेर-फेर, लिखने की गति आदि का आकलन किया जाता है। साधारणतया बच्चों और महिलाओं की लिखावट धीमी होती है। अनुभवी व्यक्तियों के लिखने की गति (मूवमेन्ट) अच्छी होती है।
- (2) इनक्लीनेशन- इसमें लिखने की ढाल एवं शब्दों की चाल आदि देखी जाती है। लिखावट दाईं या बाईं ओर है या उपर-नीचे, सीधा-तिरछा ढाल लिए हैं। इस सबका अपना अलग परिचय होता है।
- (3) स्कील- जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है उनके अक्षरों में कंपन देखा जाता है। सुगढ़ व्यक्तित्व वाले की लिखावट सुलेख एवं सुन्दर होती है।
- (4) स्पीड- इसके अन्तर्गत लिखावट का विश्लेषण किया जाता है। लिखते समय कलम पर दिए प्रेशर से अक्षरों की आकृति छोटे-बड़े, चौड़े एवं संकुचित हो जाते हैं।
- (5) क्युवर- इस पद्धति में कलम की कंपन एवं लिखावट की विवेचना की जाती है। इसमें अक्षर अत्यन्त छोटे होते हैं।
- (6) विड्थ- इसमें अक्षरों के आकार, आकृति, उसके भाग, मोड़ आदि के आधार पर विश्लेषण किया जाता है।
- (7) टर्मिनल क्रासिंग- इसमें अंग्रेजी के टी अक्षर से व्यक्तित्व की पहचान की जाती है। क्योंकि ऐसा माना



जाता है कि टी अक्षर सबका अलग होता है और उसकी नकल नहीं की जा सकती है ।

- (8) स्पेश-दो अक्षरों के बीच, दो शब्दों के बीच एवं बड़े-छोटे अक्षरों के बीच का स्पेश हरेक व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होता है ।
- (9) साईज-अक्षरों, शब्दों के साईज के आधार पर व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाता है ।

व्यक्ति यदि किसी के सबसे नजदीक एवं पास होता है तो वह उसका नाम होता है, इसलिए वह अपने नाम के हस्ताक्षर में अपने अस्तित्व को उड़ेल देता है और उसके सारे मनोभाव उसमें छपते चले जाते हैं । इसलिए हस्ताक्षर विशेषज्ञ इन सूक्ष्म चीजों को बड़ी आसानी से पहचान लेता हैं एवं उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण एवं व्याख्या कर लेता है । हस्ताक्षर विशेषज्ञ के अनुभव के आधार पर लोगों के हस्ताक्षर, लिखावट को देखकर उसके व्यक्तित्व की झलक पा सकते हैं ( जो शत् - प्रतिशत सही भी नहीं हो सकता है ) -

- (1) हस्ताक्षर में यदि नाम स्पष्ट हो तो कहा जाता है कि ऐसा व्यक्ति एकनिष्ठ एवं समय का पाबंद हो सकता है ।
- (2) हस्ताक्षर करते समय सभी अक्षर एक दूसरे से जुड़े हों तो व्यक्ति दबंग, साहसी एवं अत्यन्त चालाक होता है । ऐसा व्यक्ति किसी भी समय कुछ भी कर सकता है ।
- (3) शान्त अवस्था में हस्ताक्षर स्पष्ट एवं संतुलित अक्षर होते हैं ।
- (4) सुख एवं विजय में ये अक्षर स्पष्ट और सीधे होते हैं तथा अधिक गहराई से उकेरे होते हैं
- (5) आनन्द और उल्लास भरे वातावरण में व्यक्ति के अक्षर उड़ते हुए प्रदर्शित होते हैं ।
- (6) दंभी एवं सत्ताप्रिय व्यक्तियों के अक्षर गहरे एवं अलग किस्म के नजर आते हैं ।
- (7) दुःख, परेशानी, बीमारी, आघात के समय मन उद्वेलित एवं अशांत होता है जिसका प्रभाव लिखावट पर पड़ता है । ऐसे समय व्यक्ति असमान और असंबद्ध हस्ताक्षर करता है ।
- (8) लिखावट में जिन अक्षरों के उपर कोई चिह्न नहीं होता है ऐसी लिखावट वाले व्यक्ति अपनी बात सीधी एवं साफ बोलने वाले होते हैं । ये सामाजिक रूप से अत्यन्त संवेदनशील होते हैं । इनको बातें जल्दी चुभ जाती है तथा ये इन बातों को सोचते रहते हैं ।
- (9) जिन अक्षरों ( आई, जे ) के उपर बिन्दु साफ-सुथरे लगे होते हैं, वे नैतिक होते हैं । इन पर भरोसा किया जा सकता है क्योंकि वे विश्वसनीय होते हैं ।
- (10) अक्षरों के उपर गोल बिन्दु डालने वाले व्यक्तियों की इच्छाएँ सबसे जुदा होती है । इनकी इच्छाएँ एवं अभिलाषाएँ किसी अन्य से नहीं मिलती है । यही उनकी खास विशेषता होती है ।
- (11) जिनके अक्षर लहरदार एवं साफ होते हैं वे मनोरंजनप्रिय विनोदी स्वभाव वाले होते हैं । ऐसे व्यक्ति जिन्दगी को भारवत नहीं लेते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी सहज बने रहते हैं ।



- (12) जिनके शब्दों के अक्षर अलग-अलग होते हैं उनमें अंतर्दृष्टि क्षमता विकसित होती है। ये गंभीर विचारों के प्रति आकर्षित होते हैं तथा समस्याओं के मूल तक पहुँचने का सामर्थ्य रखते हैं।
- (13) चुस्त एवं जुड़ा अक्षर प्रदर्शित करता है कि व्यक्ति अपने उद्देश्य के प्रति सतत सचेष्ट एवं क्रियाशील होते हैं। इनमें स्थायित्व अधिक होता है। ये जिस काम को शुरू करते हैं उसे पूर्णता देने तक इसमें डटे रहते हैं।
- (14) जिनके अक्षरों की लाईन लूप बनाकर चलती है वे अत्यन्त संवेदनशील होते हैं और अपनी आलोचनाओं से डरते - घबराते हैं। आलोचनाओं के डर से किसी अच्छे कार्य को यों ही छोड़ देते हैं। इन्हें हमेशा डर सताता रहता है कि इन्हें लोग क्या कहेंगे।
- (15) अक्षरों के उपर में जो एकदम पतली बिन्दु डालते हैं वे किसी की बातों का ज्यादा तवज्जों नहीं देते तथा किसी भी चीज को पूरी तरह से एवं सरलता से समझ जाते हैं। ♦

आश्चर्य की बात है कि लोग जीवन को बढ़ाना चाहते हैं, सुधारना नहीं।

सुकरात

आज ऐसे जियो जैसे यह अन्तिम दिन हो।

बिशप कैर

जीवन अपनी इच्छा अनुकूल चलना नहीं, ईश्वर की इच्छा के अनुकूल चलने में है।

ताल्सताँय

कहीं ऐसा न हो कि जिन्दगी कि अच्छी चीजें, जिंदगी की सबसे अच्छी चीजों को ख़तम कर दें।

वाल्तैयेर

जब तक जीवन है, तब तक जीवन कला सीखते रहो।

सेनेका

जीवन एक बाजी की तरह है। हार-जीत तो हमारे हाथ में नहीं है, पर बाजी का खेलना हमारे हाथ में है।

जेरेमी टेलर



## माँ

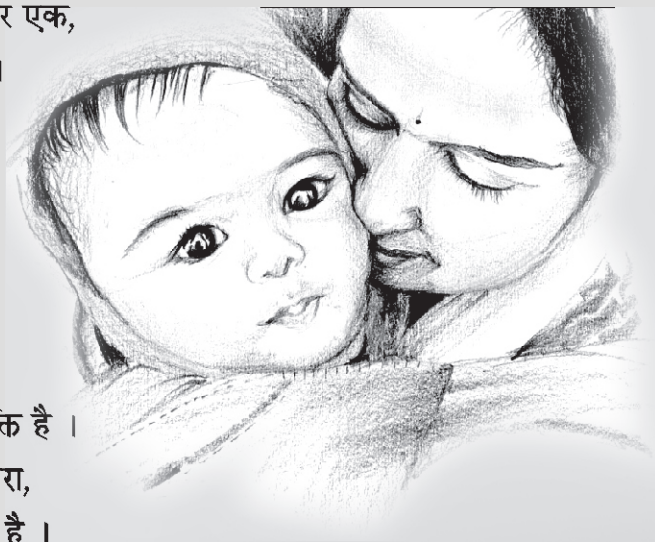
धीरेन्द्र प्रताप सिंह , लेखापरीक्षक

दुनिया की इस भीड़ में माँ,  
तू ही एक साथी सच्ची है ।  
अपने इस नालायक बेटे की,  
माँ तू क्यों इतनी अच्छी है ?

माँ तू जब साथ में होती थी,  
तब मैं ना किसी से डरता था ।  
तेरे बिन तो स्कूल के हर एक,  
घंटे में रोया करता था ।

मेरी बस एक चीख से ही,  
तेरे आसूँ आ जाते थे ।  
ओ माँ तेरी फूँक से ही बस,  
सब दर्द कहाँ खो जाते थे ।

माँ तू ही मेरी प्रेरणा है,  
हर मुश्किल में मेरी शक्ति है ।  
तुझसे दुनिया में प्यार भरा,  
तुझसे ही मन की भक्ति है ।



भगवान को न मैं जानू माँ,  
बस तुझसे प्यार मैं करता हूँ ।  
फिर भी उस अंतर्दामी से,  
मैं एक निवेदन करता हूँ ,

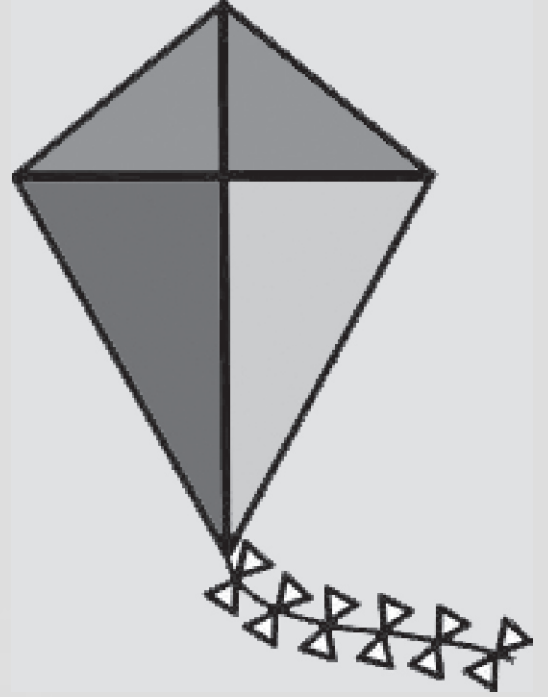
ये प्यार मुझे देती है माँ वो,  
कभी ना रोने पाये वो,  
हर पल बस रहे सामने मेरे,  
दूर कभी ना जाये वो ।♦



## पतंग

रत्ना जोयारदाव,  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं एक अति साधारण  
सफेद बेरंगी पतंग,  
मन में अधिक चाहत है  
आसमान में उड़ने की,  
बदन में नहीं सजावट  
नहीं है रंगों की रौनक,  
चलना मेरा मूल मंत्र है  
जुनून है ऊपर उठने की ।  
मैं एक अति साधारण  
सफेद बेरंगी पतंग,  
दिल की गहरी तमन्ना है  
आसमान को छूकर देखूँ  
मन में है चरम आकांक्षा  
दूसरे देश में चली जाऊँ,  
मन में है चाह सूरज को  
बादल की तरह ढक दूँ ।  
तूफान की अभिलाषा है  
मेरे लक्ष्य को भ्रष्ट करना,  
बारिश की ख्वाहिश है  
मुझे तहसनहस करना,  
रूकावट को तुच्छ करके  
मन में लिए नई उमंग,  
आसमान में उड़ती हुई  
मैं सफेद बेरंगी पतंग ।।♦



## ऐतिहासिक नालन्दा की सैर

अमर जीत कुमार, लेखा परीक्षक

हमारा पावन देश भारत यू तो महत्ताओं तथा विशिष्टताओं का अनोखा समागम लिये इतराता है। इसकी प्रमुख वास्तु विहारों में एक शिक्षा की विशिष्ट पहचान, गरिमामयी शान देखने का मेरे मन में विचार आया। तब मैं विश्व की महान धरोहर नालन्दा विश्वविद्यालय के भग्नावशेषों को देखने बिहार राज्य के पटना जिले से दक्षिण-पश्चिम में लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नालन्दा जिले में पहुँचा, जो राजगीर से 13 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में है। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मानों मेरे मन में तरह-तरह के विचार प्रकट हो रहे थे कि इस विश्वविद्यालय को इसी देश में क्यों होना था। यह क्यों विश्व विख्यात था तथा इसकी पहचान के लिए कभी हमारा देश क्यों जाना जाता था फिर क्या हुआ कि इस विश्वविद्यालय को तोड़ दिया गया।

अब हम इस विश्वविद्यालय की सारी व्यथा सुनाने की चेष्टा करते हैं। इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेष के द्वारा प्राप्त जानकारी तथा नालन्दा संग्रहालय से प्राप्त जानकारी एवं स्थानीय लोगों तथा आसपास के समस्त कलाकृतियाँ से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की रोचक जानकारी के अनुसार इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की रोचक



जानकारी जो हमें प्राप्त हुई। इसकी व्याख्या आगे किया जा रहा है।

उपत्य और सारीपुत्र को जन्म स्थान नालक को ही नालंदा कहा गया। यह प्राचीन काल का एक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र हुआ करता था। 6ठी सदी ईसा पूर्व में ही भगवान बुद्ध के काल से ही नालन्दा के प्रमाणिकता के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। नालन्दा सर्वप्रथम एक बौद्ध विहार था जिसकी स्थापना गुप्त सम्राट कुमार गुप्त ने की थी। नालन्दा की खुदाई के पश्चात समुद्रगुप्त के शासन का एक ताम्रपत्र और कुमार गुप्त के शासन का एक सिक्का भी प्राप्त हुआ है। इस विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र, व्याकरण, चिकित्साशास्त्र, तर्कशास्त्र, खगोलशास्त्र पठन-पाठन के प्रमुख विषय थे। "नालन्दा विहार" महत्वपूर्ण विहारों में से है। यहाँ एक दूसरे के उपर बनी दिवारे, फर्शों तथा नालियों से यह प्रतीत होता है कि यह क्रमशः 9 बार बना और बिगड़ा। ये छोटे-छोटे स्तूपों से घिरा हुआ एक चौकोर बुद्ध मंदिर है जो सात बार एक दूसरे से बड़ा बना है। प्रारंभ के तीन चरण आज भी धरती के नीचे दबे हैं। पाँचवाँ चरण सबसे सुन्दर तथा सुरक्षित है। परवर्ती चार चरण दिखाई देता है। पाँचवे चरण के चारों कोणों स्तूप के आकार बने हैं और दिवारों पर बुद्ध और बोधि स्तवों की ब्रीज की गुप्त शैली में कलात्मक मूर्तियों का निर्माण किया गया है। यहाँ अनेक मनौती स्तूप और चैत्य बने हैं। छोटे स्तूपों से घिरे इस चैत्य के बीच में प्रधान मंदिर और चारों कोनों पर छोटे मंदिर हैं। यह चैत्य दो बार बना। ईंटों द्वारा निर्मित भगवान बुद्ध की इस मंदिर में गज की बनी विशालकाय खंडित प्रतिमा भूमिस्पर्श विशालकाय मुद्रा में प्रतिस्थापित है। कन्नौज के राजा हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय को स्थायी तौर पर 100 गाँवों की मालगुजारी भेंट किया था जिससे यहाँ पढ़ने वाले शिष्य तथा गुरुओं का जीवन चलता था। यहाँ से बड़े रोचक तथा तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। जहाँ पर विश्व के बहुत सारे देशों से विद्यार्थीगण पढ़ने आते थे। ह्वेनसांग जो एक चीनी यात्री था लगभग 16वर्षों तक नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण किया था।

इस विश्वविद्यालय से लगभग 1.5 किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित प्रमुख द्वार पर द्वारपाल होती थी। जो खुद एक प्रकान्ड विद्वान होते थे जिन्हें दर्शनशास्त्र की विशेष विधा प्राप्त थी। सर्वप्रथम वे लोगों जो पढ़ाई के इच्छुक होते थे, की मानसिक क्षमता की परख करते थे। जो व्यक्ति द्वारपाल से प्रश्नों के बाद विवाद का उत्तर देता था उसे ही इस विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होता था। वरना विद्यार्थियों को यही वापस आना पड़ता था। जिस विद्यार्थी का एक बार दाखिला हो जाता था वे निःशुल्क शिक्षा, भोजन, पोशाक पाने के पात्र होते थे। इस महान विश्वविद्यालय का यह महत्वपूर्ण अच्छाई था। यहाँ पर लोगों के अनुशासन की काफी पहल थी। यहाँ पढ़ाने के लिए भी सारे विश्व से जाने माने विद्वान आते थे तथा सबसे खास बात यह थी कि इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के चयन, पढ़ाई, खान-पान तथा सभी साधनों में किसी प्रकार के भेद-भाव नहीं किए जाते थे। यह विश्वविद्यालय काफी अनोखा एवं अनुपम था जो शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

इस विश्वविद्यालय को दिल्ली सल्तनत के काल में अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में बख्तियार



खिलजी ने इसको बर्बाद कर दिया जो कि सिर्फ एक विद्वेष की भावना थी और हमारे देश की प्राचीनतम गरिमामयी विश्वविद्यालय का अंत हो गया । ऐसा कहा जाता है कि बख्तियार खिलजी की सेना की टुकड़ी यहाँ आकर रुकी तथा आसपास के क्षेत्रों को तबाह कर दिया । इस विश्वविद्यालय के पुस्तकों के पन्नों से बख्तियार खिलजी के सारे सेनाओं के लिए रसोई के लिए 6माह तक का ईंधन बनाया गया । इस प्रकार हमारे देश की शिक्षा का केन्द्र कहे जाने वाले विश्वविद्यालय की सभी अच्छाईयों का अन्त हो गया । और आज हम देशवासी इस आधुनिक तकनीक युक्त विश्वविद्यालय की शिक्षा से वंचित हो गए ।

आज हमारे देश में आधुनिक तकनीक का काफी अभाव है जो हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था की भी कमी की एक पहचान है । इस विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के महत्वपूर्ण स्थान होने से परिस्थिति का समाधान किया जा सकता है जो अब भी जन जीवन की चेतना जागृत कर सकता है । जब हम इस महत्वपूर्ण स्थान को देखते हैं तो यह एहसास हुआ कि सचमूच यह हमारे देश का एक प्रतिभाशाली तथा महत्वपूर्ण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु था । इस प्रतिभाशाली विश्वविद्यालय को पुनः एक विश्वस्तरीय महत्वपूर्ण शिक्षा का केन्द्र बनाने के लिए केन्द्र सरकार, बिहार सरकार तथा विश्व के भी प्रमुख सरकारों की ओर से प्रयास किया गया है । सबसे खास बात यह है कि इस विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था कोई आम विश्वविद्यालय जैसा नहीं है बल्कि इसके पठन — पाठन तथा शैक्षणिक पैमाना विस्तृत स्तर का होगा जो इस गरिमाशाली ऐतिहासिक विश्वविद्यालय को पुनः एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में योगदान देगा । इस प्रकार हम इस ऐतिहासिक यात्रा को समाप्त करते हैं ।♦

जीवन का रहस्य भोग में नहीं पर अनुभव के द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है ।

मनुष्य जीवन अनुभव का शास्त्र है ।

जो दूसरों के जीवन के अंधकार में सुख का प्रकाश पहुंचाते हैं, उनका इस संसार से कभी नाश न होगा, वे अमर हैं ।

विवेकानंद

विनोबा भावे

स्वेट मार्टिन





## दोस्ती

कौशल कुमार, लेखापरीक्षक

मानों तो यारों के संग ठिठोली का नाम हैं दोस्ती ।  
 दुनिया में लोगों की पहचान है दोस्ती ।  
 दिया जो बुरे वक्त में साथ, उसी का तो नाम है दोस्ती ।  
 सुदामा की दुनिया में कृष्ण का पैगाम है दोस्ती ।  
 प्यारों की महफिल ही हँसी शाम है दोस्ती ।

ये बनाए तो तकदीर बनती है,  
 बिगड़ जाए तो तबाही का नाम है दोस्ती ।  
 मस्तियों की झुर्रियाँ हैं, मौजों के फब्बारें हैं,  
 झुमती कलियों की पहचान है दोस्ती ।  
 क्या भला क्या बुरा, सबको सुन कर भूला,  
 इसी अच्छाइयों का नाम हैं दोस्ती ।

मत कहो क्या पाया, क्या खोया,  
 यदि दोस्तों के संग मुस्कुराया तो इसी का नाम हैं दोस्ती ।  
 शायरों की ताकतों में, सुर वालों की तान में,  
 कव्वालों की आवाज में पहचान है दोस्ती ।  
 यू मानों तो दिल्ली का नाम है दोस्ती ।  
 हँसियों की वादियाँ हैं, जीवन की जम्हाईयाँ हैं,  
 महफिलों से सजी एक पहचान हैं दोस्ती ।  
 यादों की महफिल में, ख्वाबों की सुरों में,  
 तनहाईयों की पहचान हैं दोस्ती ।

मदमस्त सावन के झूलों की उन्माद, परिमुक्त पावन सा भोला  
 वो परिहास लोगों की सासों की पहचान है दोस्ती ।  
 मानों तो यारों के संग ठिठोली का नाम है दोस्ती ।♦



## कोशिश करने वालों की

सौरभ कुमार, लेखाकार

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।  
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,  
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।  
मन का विश्वास रंगों में साहस भरता है,  
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।  
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।  
असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करें,  
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करें।  
जब तक न सफल हों, नींद चैन को त्यागें तुम,  
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागें तुम।  
कुछ किए बिना ही जय जय कार नहीं होती,  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।♦

जीवन की लम्बी यात्रा में,  
खोये भी हैं मिल जाते,  
जीवन है तो कभी मिलन है,  
कट जाती दुःख की रातें।

जयशंकर प्रसाद



## ताजा खबर

सुदीपा चक्रवर्ती ,लेखाकार

गांधी जवाहर के देश में  
यह क्या हो रहा है,  
देश में राष्ट्र भाषा हिन्दी का  
निष्कासन क्यों हो रहा।  
विद्यालय में हिन्दी विषय  
अनिवार्य होकर रह गया,  
पूर्ण रूप से भारत अभी भी  
अंग्रेजी चंगुल में फँस गया,  
हिन्दी दिवस व हिन्दी पखवाड़े  
का भी आयोजन किया गया,  
जिसमें हिन्दी को उचित दर्जा देने का  
कोरा आश्वासन दिया गया।  
ताजा खबर, हिन्दी भाषी विद्यार्थी को  
विद्यालय में प्रवेश न दिया गया  
अंग्रेजी में गिट-पिट करने वालों को,  
सर आँखों पर बिठाया गया।♦



जहाज समंदर के किनारे सर्वाधिक सुरक्षित रहता है। मगर क्या आप नहीं जानते कि उसे किनारे के लिए नहीं, बल्कि समंदर के बीच में जाने के लिए बनाया गया है।

माया एंजिलो

अगर तुम किसी चीज को पसंद नहीं करते हो तो उसे बदल दो। अगर उसे बदल नहीं सकते तो अपना रवैया बदल दो।

ऐल्बर्ट आइन्स्टीन



## हिंदी के अच्छे दिन लायेंगे

गनेश शर्मा (लेखाकार)

मैं अपनी मातृभाषा "हिन्दी" के विकास-प्रसार के बारे में बाते कर रहा हूँ। एक समय था, जब देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक कभी हिन्दी का बोलबाला सातवें आसमान पर हुआ करता था, वहीं आज इस भाषा को अपने अस्तित्व के लिए जुझना पड़ रहा है। हम सभी लोग शायद भूल चुके हैं कि ब्रिटिश शासक लार्ड मैकाले ने अपनी कुटनीति के तहत ही भारत पर अपनी शासन कायम रखने के लिए अंग्रेजी थोपी थी और हमारी भाषा संस्कृति पर सुनियोजित ढंग से प्रहार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी शासकीय भाषा बनी और हिन्दी को गुलामी का दर्जा मिला। जो आज भी बदसुलकी का जीवन जी रहा है।

एक बात सही है, कि आज के नये दौर में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए नये-नये तरीके अपनाये जा रहे हैं। आज, एक तरफ कंप्यूटर के जरिए अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करके इसे बढ़ावा दिया जा रहा है, तो दूसरी तरफ हिन्दी की कक्षा में पढ़ने वाले छात्र प्रवेश अनुमति चाहते हैं, तो कहते हैं "में आई कम इन सर" और हमारे हिन्दी शिक्षक भी बड़े शान से "यस कम इन" बोलकर अनुमति देते हैं, इसका दुखद पहलु तो यह भी है कि जो लोग हिन्दी से जुड़े हुए हैं या विकास करने का मार्गदर्शन दिखाते हैं वह स्वयं भी इसका अनादर करने से बाज नहीं आते।

अंग्रेजी भाषा आज इतनी भारी पड़ रही है, कि घर में बच्चे जब "टुविंकल-टुविंकल लिटिल स्टार" की कविता सुनाता है तो सीना गर्व से फूल जाता है, इतना ही नहीं अधिकांश लोग घर में घुसते ही बड़े चाव के साथ हिन्दी फिचर या गाने लगाते हैं और आराम कुर्सी पर बैठ कर इसका आनंद उठाते हैं, वही लोग घर से बाहर निकलते ही, अंग्रेजी शब्द का प्रयोग ऐसे करते हैं मानो वे अंग्रेजी के अलावा कुछ जानते ही नहीं। इसका कारण यह कि हम सभी भारतवासी अंग्रेजी बोलने वाले को विद्वान और सभ्य समझते हैं, वही पर हिन्दी बोलने या प्रयोग करने वाले हीन भावना से देखते हैं। आज दिन-प्रतिदिन हिन्दी भाषा का ज्ञान औपचारिकता तक सिमट गया है। विशेष तौर पर युवाओं के बीच हिन्दी जैसे गुम सी होती जा रही है। आज सरकारी कार्यालयों और स्वायत्





संस्थानों में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सरकार नई-नई योजना और प्रोस्ताहन दे रही है। प्रत्येक वर्ष हिन्दी पखवाड़ा मनाकर सभी को जागृत करने का प्रयास किया जा रहा है। पखवाड़ा खत्म होते ही हिन्दी के महत्व को भुलना नहीं चाहिए। जब भी कार्यालयों में हिन्दी सिखने या इससे संबंधित कोई कार्य करने के लिए कहा जाता है, तो सभी के चेहरे पर पसीने की लकीरें दिखाई देने लगती हैं। वे ऐसे व्यवहार प्रकट करते हैं मानों उन्हें हिन्दी सिखने नहीं, अलाहीन का चिराग लाने को कह दिया गया हो और वे इससे पीछा छुड़ाने का बहाना करते हैं।

आखिर हम सभी भारतवासी अपनी मातृभाषा के प्रति इतने उदासीन क्यों होते जा रहे हैं। एक तरफ "हम हिन्दी है, वतन है, हिन्दुस्तान हमारा" का नारा देते हैं वही दुसरी तरफ इसका प्रयोग करने में शर्मींदगी महसूस करते हैं। अगर यही सिलसिला चलता रहा तो हमारे हिन्दी के अच्छे दिन कब आयेंगे। अच्छे दिन लाने के लिए हम सभी को इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना होगा और ज्यादा से ज्यादा हिन्दी में लिखने-पढ़ने और कार्यालयों में इसका प्रयोग करना होगा, तभी हिन्दी के अच्छे दिन आ सकते हैं और इस नारे को हमेशा अपने मन में समेटे रखना होगा।

"हम हिन्दी ही अपनायेंगे, इसके अच्छे दिन लायेंगे।

हिन्दी भारत की भाषा है, हम दुनिया को दिखायेंगे।।"♦

प्रवृत्ति की कमजोरी चरित्र की कमजोरी बन जाती है।

विंस्टन चर्चिल

नजरिया एक छोटी सी चीज है जो बड़ा अंतर डालती है।

आस्कर वाईल्ड

नैतिकता महज एक रवैया है जो हम ऐसे लोगों के प्रति अपनाते हैं जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से नापसंद करते हैं।

जोएल ओस्टीन

उपलब्धि से अधिक और कोई भी चीज आपके अन्दर आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास नहीं पैदा करती।

थोमस कार्लैले

सफलता के लिए आत्म-विश्वास आवश्यक है, और आत्म-विश्वास लिए तैयारी।

आर्थर ऐश



## नाम बड़े, हस्ताक्षर छोटे

अनिल कुमार झा, लेखापरीक्षक

प्रगति राष्ट्रभाषा करे, यह विचार है नेक  
लेकिन आई सामने, विकट समस्या एक  
विकट समस्या एक, काम हिन्दी में करते  
किन्तु शार्ट में हस्ताक्षर, करने से डरते  
बोले "काशीनाथ" जरा हमको बतलाना  
दोनों आँख होते हुए, लिखूँ में "काना" ।

इस तरह से और भी, कर सकते हैं तर्क  
प्रोफेसर या प्रिंसिपल, अफसर, बाबू, कर्ल्क  
अफसर, बाबू, कर्ल्क, होय गड़बड़ घोटाला  
डाक्टर "नाथु लाल" करे हस्ताक्षर "नाला"  
कह 'काका' बतलाओ क्या संभव है, ऐसा  
लाला भैरों सिंह लिखे अपने को भैंसा ।

परिवर्तन घनघोर है, बदल जाएँगी कौम  
डोंगर मल संक्षिप्त में, लिख जाएँगे डोंम  
लिख जाएँगे डोंम, नाम असली खो जाएँ  
उजले कांठी लाल किंतु कहलाएँ काला  
भैय्या भाई लाल पुकारे जाए भाला ।

अच्छे- अच्छे नाम भी हो जाएँ बदनाम  
जबकि हरिहर राम को, लिखाना पड़े हराम  
लिखना पड़े हराम, किसी का क्या कर लेंगे  
चिढ़ा-चिढ़ाकर गज धारी को गधा कहेंगे  
कहे "काका" कवि बाबु लाल बनेंगे बाला  
पंडित प्यारे लाला लिख जाएंगे प्याला



हिन्दू ईश्वर दत्त है वे लिखेंगे ईद  
 लाला लीला दत्त जी, बन जाएंगे लीद  
 बन जाएंगे लीद, मजे तो तब आएंगे  
 तेजपाल जब तेली कहलाएंगे  
 कहे "काका" कवि होली लाल बनेंगे होला  
 बाबु छोटे लाल लिखें जाएंगे छोला ।

जान बुझकर व्यर्थ ही, क्यो होते बदनाम  
 उतना दुखदायी बने, जितना लंबा नाम  
 जितना लंबा नाम, रखो छोटे से छोटा  
 दो अक्षर से अधिक नाम होता है खोटा  
 सुक्ष्म नाम पर कभी नहीं पड़ सकता डाका  
 काका को उल्टों पल्टो, फिर भी रहेंगे "काका" ।।♦

इस जीवन का हर दिन एक कोरा कागज है। इस कागज पर श्वास रूपी स्याही और समझ  
 रूपी कलम से आप जो चाहे लिख सकते हैं।

प्रेम रावत

बड़े काम करने के लिए आत्मविश्वास पहली अनिवार्यता है।

सैम्युएल जोंसन

खुद पर भरोसा रखो। अपनी क्षमताओं पर विश्वास करो। बिना अपनी शक्तियों में  
 एक विनम्र लेकिन उचित आत्मविश्वास के तुम सफल या प्रसन्न नहीं हो सकते।

नोर्मन विन्सेंट पील

निष्क्रियता संदेह और भय को जन्म देती है कार्रवाई विश्वास और साहस को।

डेल कार्नेगी



## बनूँ तो मैं क्या बनूँ

रिमी हालोई  
सुपुत्री- सरवेश्वर हालोई, लेखाकार

बनूँ तो मैं क्या बनूँ  
सब कहते हैं अलग-अलग,

बनूँ तो मैं क्या बनूँ।  
पापा कहते हैं अफसर,  
माँ कहती है डाक्टर,

पर बनूँ तो मैं, क्या बनूँ।  
भाई कहता है, इंजिनियर  
बहन कहती है, वैज्ञानिक

पर बनूँ तो मैं, क्या बनूँ।  
मन में सोच आयी, कि मैं टिचर बनूँ।♦





## कष्ट से जीत की प्राप्ति

प्रतिमा मजुमदार, व.लेखाकार

कष्ट से जीत की प्राप्ति  
कष्ट, कष्ट, कष्ट  
जीवन के हर पथ में कष्ट  
हर राह में है कष्ट  
कष्ट काली, दुखभरी।  
दुख में न तुम डरो।  
हारोगे तो मरोगे  
साहस करोगे तो जीतोगे।  
कष्ट, कष्ट, कष्ट  
जिन्दगी के हर पथ में है कष्ट  
और इसी से है जीत की प्राप्ति  
इसके बिना न कोई शांति  
इसलिए तो कहा गया है,  
कष्ट से होती है, जीत की प्राप्ति।♦



अपनी क्षमता को पहचानकर और उस पे विश्वास कर के कोई एक बेहतर दुनिया बना सकता है।

दलाई लामा

यदि आप एक बार अपने साथी नागरिकों का भरोसा तोड़ दें, तो आप फिर कभी उनका सत्कार और सम्मान नहीं पा सकेंगे।

अब्राहम लिंकन

## "ममता की आस"

रंजीत गुप्ता, लेख्यापरीक्षक

वह प्राइमेरी स्कूल की टीचर थी। सुबह उसने बच्चों का टेस्ट लिया था और कापियाँ देखते- देखते उसके आँखों से आँसू टपकने लगे। उनके पति वही लेटे टी.वी देख रहे थे। अपनी पत्नी को रोते देख उन्होंने रोने का कारण पूछा ! वह बोली, सुबह मैंने बच्चों को "मेरी सबसे बड़ी इच्छा" विषय पर कुछ पंक्तियाँ लिखने को कहा था। एक बच्चे ने इच्छा जाहिर की है कि भगवान उसे टेलिविजन बना दें। यह सुनकर पतिदेव हँसने लगे। वह बोली, आगे तो सूनो ! बच्चे ने लिखा है- यदि मैं टीवी बन जाऊँगा तो घर में मेरी एक खास जगह होगी और सारा परिवार मेरे इर्द- गिर्द रहेगा। जब मैं बोलूँगा तो सारे लोग मुझे ध्यान से सुनेंगे। मुझे रोका-टोका नहीं जाएगा और न ही उल्टे सवाल होंगे। जब मैं टी.वी. बनूँगा तो पापा ऑफिस से आने के बाद थके होने के बावजूद मेरे साथ बैठेंगे। मम्मी को जब तनाव होगा तो वे मुझें डाँटेंगी नहीं बल्कि मेरे साथ रहना चाहेंगी। मेरे बड़े भाई - बहनों के बीच मेरे पास रहने के लिए झगड़ा होगा। यहाँ तक कि जब टीवी बंद रहेगा तब भी उसकी अच्छी तरह देखभाल होगी, और हाँ, टीवी के रूप में मैं सबको खुशी भी दे सकूँगा। यह सब सुनने के बाद पति के मुँह से यही निकला, हे भगवान ! बेचारा बच्चा ! उसके माँ - बाप तो उस पर जरा भी ध्यान नहीं देते। टीचर (पत्नी) आँसू भरी आँखों से उसकी तरफ देखकर बोली, जानते हो यह बच्चा कौन है ?



हमारा अपना बच्चा ----- हमारा छोटू !

"सोचिए कहीं यह ममता की आस में निराश बच्चा आपका अपना बच्चा तो नहीं।" ♦



## माँ का प्यार

प्रीति मणि दास  
सुपुत्री-रेखा मेधि दास  
( एम.टी.एस ) ( ले.व.ह. )

माँ की गोद में सर रखकर सोने से,  
ऐसा लगता है जैसे पुरा जन्नत पाया हो।  
जैसे किसी खुला आसमान ने,  
मुहब्बत बरसाया हो।  
मां हमें चाँद-तारों से चुन-चुन के  
खुशियों का चादर ओढ़ाती है,  
मुश्किल वक्त में भी हमारा साथ देती है,  
हे प्रभु अब दुआ है, तुमसे यहीं,  
मुझसे दूर उनको ले जाना नहीं,  
क्योंकि, इस जन्नत से भी प्यारी,  
माँ है मेरी।♦



जीवन में सफल होने के लिए आपको दो चीजें चाहिएं – अनभिज्ञता और आत्मविश्वास ।

मार्क ट्वैन

सभी के साथ विनम्र रहे, पर कुछ ही के साथ अन्तरंग हों, और इन कुछ को अपना विश्वास देने से पहले अच्छी तरह परख लें ।

जार्ज वाशिंगटन

जिन लोगों ने हमें अपना पूर्ण विश्वास दिया है वो ये सोचते हैं कि उन्हें हमारे विश्वास का अधिकार है ।  
यह निष्कर्ष गलत है, उपहार कोई अधिकार नहीं प्रदान करता ।

फ्रेडरिक नीतजे

शब्दों में दयालुता विश्वास उत्पन्न करती है । विचारों में दयालुता प्रगाढ़ता उत्पन्न करती है ।  
बांटने में दयालुता प्रेम उत्पन्न करती है ।

लाओ जू



## जल का सदुपयोग

प्रशान्त मलिक ( डाटा एंट्री ऑपरेटर ) ( ले. व हक. )

जल जीवन है, जीवन जल में  
बुझों क्या रखा है कल में  
एक समस्या बढ़ी आ रही  
तेरे निकट जो हर एक पल में।  
सुबह-सुबह जब उठती अम्मा  
उसको कंधे में एक ही जिम्मा  
पंक्ति में लग बारी-बारी  
जल भरती धीमी-धीमी।  
उपयोग करो सब थोड़ा-थोड़ा  
उतना खर्चो जितना जोड़ा  
ज्यादा के नुकसान बड़े है  
धरती पर इंसान बड़े है।  
अगली पीढ़ी का भी सोचो  
उनके ख्वाबों को मत नोचों  
सोचो और पश्चाताप करो  
बोलो भगवान माफ करो।  
जल जीवन है, जीवन जल में  
यही दिखता है हमको कल में  
एक समस्या बढ़ी आ रही  
मेरे निकट जो हर एक पल में।♦





## मानवता

नेहा गुप्ता, लेख्यापरीक्षक

सीट खाली होते ही, एक फटी पुरानी साड़ी पहने महिला जिसके बाल बहुत अस्त व्यस्त से थे, बैठ गई। उसके बैठते ही उसके अगल- बगल के लोग जिसमें मैं भी शामिल थी, उपेक्षा तथा घृणा से मुँह बिचका लिया। उस निम्न स्तरीय मजदूर औरत का हमारे जैसे तथाकथित पढ़े - लिखे, समझदार, सभ्य लोगों के बीच बैठने से हमारे शान में आँच आ रही थी। उसका साँवला बदन हमारी गोरी चमड़ी की खूबसूरती को फीका कर रहा था। तभी अचानक एक औरत जिसके हाथ में दुधमुहाँ बच्चा था, सामने आकर खड़ी हो गयी। हमारे जैसे समझदार, पढ़े - लिखे लोगों में से किसी ने भी उठकर उसे जगह तक ना दी, पर वह गरीब जो दिनभर कहीं से मजदूरी कर लौट रही थी, उठकर तुरंत जगह दे दी। उस गरीब की औकात भले ही आर्थिक दृष्टि से तुच्छ थी, पर मानवता के पैमाने पर हमारा नामो निशान कहीं ना था।♦



## मानव धर्म

नीहाल लोध, सहायक लेखा अधिकारी

आओ आओ हम लहराए  
ध्वजा मानवता का  
आओ आओ हम रोके,  
युद्ध धर्म का,  
संघर्ष जात-पात, रंग भेद का।  
रंगली आज चोली  
खून से,  
रूक गई आज बोली भय से,  
भूल गए दास्ताँ हम प्यार के।  
ऊजड़े घर राम, रहीम  
और पिटर का,  
चारो ओर सिर्फ  
सन्नाटा ही सन्नाटा।  
आओ आओ हम रोके  
युद्ध धर्म का,  
संघर्ष जात-पात, रंग भेद का।  
आओ आओ हम लहराए  
ध्वजा मानवता का।  
छोड़ो कहानी नफरत की  
बढ़ाओं हाथ मुहब्बत की  
अपना लो राह शांति की।  
मुहब्बत की राह से  
अब हम चलेंगे।  
धर्म के नाम से  
अब न मरेंगे।  
भुलाकर ये भेद भाव  
हम सब जिएं।  
आओ आओ हम रोके  
युद्ध धर्म का,  
संघर्ष जात-पात, रंग भेद का।  
आओ आओ हम लहराए  
ध्वजा मानवता का।♦



## एक गाँव का बुढ़ा

कुमारी देबोन्मिता राय  
सुपुत्री श्री देबाशीष राय, स.ले.अ

एक दिन एक मैदान में कुछ बच्चें खेल रहे थे। पास ही एक झोपड़ी में एक बुढ़ा आदमी रहता था, वह बच्चों के हँसने, रोने, गाने आदि की आवाज सुनकर कहा कि आज इतने बच्चें कैसे आ गए। शायद भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली, वह बुढ़ा आदमी झोपड़ी से बाहर जब निकला तब वह सारे बच्चें दोड़ते हुए उनके पास आए और कहने लगे माफ करें पर हम लोग क्या करें यहाँ से कुछ दूर पर हमारे खेलने का मैदान है, पर वहाँ सरकार ने शहरी लोगों के लिए बड़ी-बड़ी इमारतों का निर्माण कार्य चला रहा है। इसलिए हम यहा आ गए। बुढ़े आदमी ने कहा ठीक है तुम लोग यहा खेल सकते हो पर सरकार ने यह ठीक नहीं किया। चलो मुझे उनके पास ले जाओ जो यह कार्य कर रहे है। जब वे वहाँ पहुचें तो उन्होंने कहा, आप बच्चें के मैदान में इमारत क्यों बनवा रहे है। वहाँ पाठशाला बनवानी चाहिए। सरकारी कर्मचारी ने कहा- नहीं, बच्चों को बड़े होने पर जो खेती में काम हमने किया वही कठिन काम बच्चें करेंगे यह सुनकर सरकार ने कहा की हाँ बच्चे तो यही करेंगे। शहर के लोगों के लिए घर नहीं है। जब शहर के लोगों के रहने का घर बन जाएगा तब मुझे अगर कोई खाली मैदान मिले तो वही पाठशाला बनवाने की कोशिश करूंगा। वह बुढ़ा आदमी पुछा कब। सरकार कहे करीब बारह साल बाद। बुढ़ा आदमी कहे, इतने समय बाद तब शायद बच्चें बहुत बड़े हो जाएंगे। सरकार ने कहा तो में और कुछ नही कर पाऊँगा। बुढ़ा आदमी ने कहा- नहीं, आप अभी बना जाइए। मेरे जाने के बाद मेरे झोपड़ी के पास मैदान में आप बच्चों के लिए पाठशाला बनवाइए। सरकार ने कहा- नहीं, अभी मैं ऐसा नहीं कर सकूँगा, अब तुम मुझे परेशान मत करो और चले जाओ वापस मत आना। फिर वे चले गए। कुछ दिन बाद वह बच्चे आना बंद कर दिया और वह बुढ़ा आदमी भी बहुत बीमार पड़ गया। कुछ दिन बाद वे गुजर गए। सब को यह देखकर बहुत बुरा लगा और तभी सरकार ने फैसला लिया की वे आज से बच्चों के पढ़ने के लिए पाठशाला बनवाएंगे और बच्चो ने फैसला लिया की वे बहुत मेहनत करेंगे और उस बुढ़ा आदमी और अपने गाँव का नाम रोशन करेंगे। ♦



## भगवान का वादा

अनिता देवी

पन्ती श्री बसकीत राय, लेखाकार

मेरे मार्ग पर पैर रख कर तो देख,  
 तेरे सब मार्ग न खोल दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए खर्च करके तो देख,  
 कुबेर के भण्डार न खोल दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए अच्छे वचन सुन कर तो देख,  
 कृपा न बरसा दूँ तो कहना।  
 मेरी तरफ आकर तो देख,  
 तेरा ध्यान न रखूँ तो कहना।  
 मेरी बातें लोगों से करके तो देख,  
 तुझे मूल्यवान न बना दूँ तो कहना।  
 मेरे चरित्रों का मनन करके तो देख,  
 ज्ञान के मोती तुझमें न भर दूँ तो कहना।  
 मुझे अपना मददगार बनाके तो देख,  
 तुझे सबकी गुलामी से न छुड़ा दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए आँसू बहा कर तो देख,  
 तेरे जीवन में आनंद के सागर न बहा दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए कुछ बन के तो देख,  
 तुझे कीमती न बना दूँ तो कहना।  
 मेरे मार्ग पर निकल के तो देख,  
 तुझे शांतिदूत न बना दूँ तो कहना।  
 स्वयं को मुझ पर न्योछावर करके तो देख,  
 तुझे मशहूर न करा दूँ तो कहना।  
 तू मेरा बनके तो देख,  
 हर एक को तेरा न बना दूँ तो कहना।♦





## ऊँची उड़ान मेरी पहचान

फिरोज, लेखापरीक्षक

बुझी हुई शमां जला सकता हूँ,  
भँवर फँसी कश्ती किनारे लगा सकता हूँ ।

मायूसी नहीं मुझे अपनी जिन्दगी से,  
खुद की तकदीर बना सकता हूँ ।

अगर मौका मिला किस्मत बनाने का,  
खुद को बुलन्दी पर ला सकता हूँ ।

मेरे हौंसले हैं कितने बुलन्द,  
वक्त आने दो बता सकता हूँ ।

ख्वाब कभी जो देखे थे पूरे न हुए,  
वही सपने पूरे करके दिखा सकता हूँ ।

रोड़े बनकर राहों में आए चाहे जितने,  
दम रखता हूँ ठोकर लगा सकता हूँ ।♦

हर वो अनुभव जिसमे आप भय का सामना करते हैं, वो आपकी शक्ति,  
साहस और आत्मविश्वास को बढ़ता है ।

एलेनोर रूजवेल्ट

साहस भय और आत्मविश्वास के बीच का जरिया है ।

अरस्तु

स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है । संतोष सबसे बड़ा खजाना है ।  
आत्म -विश्वास सबसे बड़ा मित्र है ।

लाओ जू



## प्रजातंत्र की दुर्दशा

कुमार करुणेशम (लेखाकार)

यँ तो सबसे अच्छा है प्रजातंत्र सरकार  
 फिर भी भारत देश हमारा बना पड़ा लाचार।  
 बेरोजगारी, भ्रष्टाचारी और मंहगाई में जीना है दुश्वार,  
 देश को लूट कर लोग मना रहें त्योहार।  
 पाँच साल में ये जनता को दिखते हैं एक बार,  
 लेकिन ये जनमानस की भावनाओं से खेलते हैं बार-बार।  
 जात धर्म के नाम पर लड़ाकर बढ़ाते हैं तक़ार,  
 अपनी कुर्सी बचाने के खतिर रहते हैं बेकरार।  
 समस्या से निजात दिलाने का करते हैं ये करार,  
 जीत जाने के बाद बढ़ाते अपने पैसों का कारोबार।  
 आज देश का हर बच्चा है जन्म से कर्जदार,  
 गरीबों और अशिक्षा को बना कर ये हथियार।  
 भोली भाली जनता पर कर रहें ये अत्याचार,  
 आओ हम सब मिलकर चुने एक ऐसी सरकार,  
 जो सबके दुखों को दूर हो करता और बढ़ाये लोगो में प्यार।♦

हमें लगातार समस्याओं को हल करने का प्रयास करते रहना चाहिए, एक-एक कर के,  
 चरणबद्ध तरीके से, यदि बहरोसे और सहयोह के आधार पर नहीं तो कम से कम आपसी  
 सहनशीलता और निजी-स्वार्थ के लिए. - **लेस्टर बी. पीयर्सन**



## राष्ट्रभाषा का महत्व

अनुष्का सरकार  
सुपुत्री बनानी सरकार (व. लेखाकार)

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा हुआ करती है। स्वतंत्र राष्ट्र की पहचान का एक माध्यम उसकी अपनी भाषा का होना माना जाता है। जिस राष्ट्र की अपनी कोई भाषा नहीं होती उसका कोई साहित्य भी नहीं हुआ करता। संस्कृति भी सुरक्षित नहीं रह पाती। ऐसे राष्ट्र को दरिद्र और हीन समझा जाता है। हर समझदार मानता है कि सर्वव्यापकता राष्ट्रभाषा की मुख्य विशेषता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इस भाषा में सरलता, नियमबद्धता, व्यापकता आदि वे सभी गुण हैं जो एक राष्ट्रभाषा में होनी चाहिए। जो भाषा सीखने में जितनी सरल है उतनी ही लोकप्रिय है। हिन्दी भाषा भाषी की संख्या देश में सबसे अधिक है। यही कारण है कि संस्कृत के बाद जन्मी भाषाओं का काल समाप्त होने के बाद मध्यकाल में आकर जिस भाषा को सबसे अधिक महत्व मिल सका वह हिन्दी ही है। उस काल में भी इस भाषा को पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक सभी जगह समान रूप से समझा जाता था। इतना ही नहीं ब्रिटिश शासनकाल में जब देश स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा था, तभी राष्ट्रपिता गाँधी के प्रयत्नों से सारे देश ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानकर प्रचार करना भी आरंभ कर दिया था। आज भी हिन्दी भाषा देश के किसी भी कोने में काम चलायी जा सकती है। हमें हमारी राष्ट्रभाषा को सम्मान देना चाहिए जो हमारी देश की उन्नति को लिए सहायक होगी, अन्यथा भारत का विकासित देशों की पंक्ति में आने की बात स्वप्न बनकर रह जाएगी। ♦

आशावादिता वो विश्वास है जो उपलब्धि की तरफ ले जाती है। बिना आशा और विश्वास के कुछ भी नहीं किया जा सकता।

हेलेन केलर

आत्मविश्वास संक्रामक है और इसकी कमी भी।

विन्से लोम्बार्डी



## हिन्दी और हम

पूजा छेत्री  
सुपुत्री:-गोरे बहादुर छेत्री,  
रिकार्ड कीपर ( ले.प. )

हिन्दी है तो भारत है ।  
भारत है हिन्दी है ॥

हिन्दी भारत की शान है ।  
हमारे देश की जान है ॥

हिन्दी हमारे भारत की ।  
माथे की है बिन्दी ॥

अगर हमने हिन्दी को नहीं माना अपना ।  
तो बिखर जाएगा इस देश का सपना ॥

एक दिन हिन्दी बनेगा जन - जन की भाषा ।  
यही है हम भारतवासियों की आशा ॥

आओं हम सब मिलकर हिन्दी को अपनाएँ ।  
इस सुन्दर भारत को अति सुन्दर बनाएँ ॥♦

दरअसल , लोगों का विश्वास पैसे से अधिक मूल्यवान है ।

कार्टर जी. वुड्सन

दूसरे की अच्छाई में यकीन होना खुद में अच्छाई होने का एक अच्छा प्रमाण है ।

मिशेल डी.मोंटेगने

चाहे आप छोटी या बड़ी जगह से हों , आपकी सफलता आपके आत्मविश्वास और दृढ़ता से निर्धारित होती है ।

मिशेल ओबामा





## हालात

बिचा यादव  
पत्नि अमित यादव  
( डाटा एंट्री ऑपरेटर )  
( ले व ह )

एक दिन बैठे सोच रहा था  
खुद से बातें पूछ रहा था,  
क्या कर पाया मैं जीवन में  
खुद का जीवन खोज रहा था।

हालातों की करें न बातें  
जाग-जाग कर काटी रातें,  
खुद का ही विश्वास बड़ा  
झुठे हैं सब रिश्ते नाते।

फटे-पुराने मेरे कपड़े  
हालातो संग मेरे लफड़े  
दो वक्त की रोटी मांगी  
हर दम मिलते सबसे झगड़े।



घमंड करोगे गिर जाओगे  
हालातों से चिर जाओगे  
खो दिया जितना खो बैठे हो  
हिम्मत रखो फिर पाओगे।

गौरव और सम्मान बढ़ा है  
हालातों ने जो जकड़ा है,  
उम्मीदों का दामन थामों  
अभी तो सारा जीवन पड़ा है।♦



## मनुष्य- धर्म

शम्भु कुमार नाथ  
सहायक लेखा अधिकारी

हम धरती के श्रेष्ठ जीव हैं। श्रेष्ठता के नाते हमारा दायित्व भी अधिक है। हम जीव कुल ओर धरती के श्रेष्ठ हैं। सोचिए हमारा दायित्व कितना बड़ा है। मनुष्य का जीवन मुलतः आत्मकेन्द्रित है। आत्मकेन्द्रित मानव अपनी प्रतिष्ठा और प्रगति के लिए काम करता है। कर्म ही धर्म है। ऐसा काम हम न करें जो मानव की श्रेष्ठता को हानि पहुंचाएं।

आत्मकेन्द्रित मानव काम करता है, अपने स्वार्थ के लिए। लेकिन निःस्वार्थ काम करना मानव का महत्व है। क्रोध, अहंकार, अज्ञानता और आलस्य जैसे अवगुण मानव को अवदमित करता है। सेवा, निष्ठा और समर्पण जैसे सदगुण मानव को आगे बढ़ाता है।

सदगुण क्या है, अवगुण क्या है और अपनाने के लिये सुशिक्षा और ईश्वर का प्यारा होना चाहिए। सुशिक्षा आता है अपने घर से और राष्ट्र से। ईश्वर का प्यार पाने के लिए अपना कर्म और धर्म ठीक होना चाहिए। शिक्षा आदमी को ज्ञानी और विनयी बनाता है। धर्म आदमी को निर्मल और पथ दिखाता है। धर्म मार्ग दर्शन देता है।

श्रेष्ठ है ज्ञान, ज्ञान से बड़ा है निष्ठा, कर्तव्य। कर्तव्य निष्ठा ध्यान है जिसे हम साधना कहते हैं। उसे ध्यान से बड़ा है समर्पण है। मनुष्य श्रेष्ठ का मूल है, ज्ञानी है, अज्ञानी आदमी पशु तुल्य है।

आत्मकेन्द्रित होने के नाते मनुष्य का ज्ञान बढ़ रहा है। परन्तु सदगुण घट रहा है। धन बढ़ रहा है, परन्तु मानवता सिमट रही है। परिणाम स्वरूप मानव सुख, शांति के बजाय दुःख और अशांति की आंधी से निपट रहा है। जीव श्रेष्ठ की श्रेष्ठता लुप्त हो रही है। मानव धर्म जैसे मानवता खो रहा है। इसलिए समर्पण धर्म की जरूरत है। समर्पण के बिना जीवन नीरस हो जाता है। समर्पण आदमी को महान बनाता है। जीवन में धर्म का मूल है समर्पण। किसी धर्माचार का वाद श्रदालु ने किसी फल खाना त्याग करते हैं, वह भी समर्पण धर्म का एक आधार है। क्योंकि पूजा, आराधना से समर्पण से पुण्य होता है।

मानव अपने शरीर को जैसा दुःख नहीं देना चाहता हैं, धरती अर्थात् प्रकृति को भी ऐसे ही दुःख नहीं देना चाहिए। क्योंकि मनुष्य का शरीर प्रकृति है। मनुष्य का आत्मा-परमात्मा का अंश है। अंतरात्मा भगवान है। भगवान पुरुषोत्तम और उनका शरीर प्रकृति है। ब्रह्माण्ड भगवान का शरीर है। तब सोचिए प्रकृति के हानि अर्थात् भगवान की शरीर पर आघात।

प्रकृति उदार है, तो हम क्यों अनुदार बनें। ईश्वर महान है तो हम क्यों दानव बने ? हमारा अंतरात्मा पुरुष है, तो हम क्यों पुरुषार्थ न करें ? इसलिये जो जिस क्षेत्र में श्रेष्ठ है, उसे अपनी बढ़ाये श्रेष्ठता सटिक रूप से अपनाना चाहिए। ताकि अपने जीवन के साथ समाज और देश आगे बढ़े। इसलिए राष्ट्र का दायित्व अधिक से अधिक है। कर्ता के अनुसार कर्म होता है। कर्ता की सटिक जिम्मेदारी भगवान को प्यारी है।♦



## जीये तो कैसे जीये

अन्नोषा देब  
पिता- अजय देब,  
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

जिदंगी एक अमूल्य धन है और भगवान के द्वारा दिए गए इस धन का हमें भरपूर फायदा उठाना चाहिए। लेकिन आज हर व्यक्ति इतना लोभी और लालची हो गया है, कि वह अपने जीवन से कभी भी संतुष्ट नहीं होता या फिर जीवन में आने वाली कठिनाइयों से हारकर अपनी जिदंगी से निराश हो बैठता है, पर क्या इसे ही जिदंगी कहते हैं ? अपने जीवन को खुशहाल या दुखी बनाना हमपर निर्भर करता है। हमारे पास जो कुछ भी है, अगर उसी में हम संतुष्टि प्राप्त करते हैं, तो हम खुश रहेंगे, लेकिन जरूरत से ज्यादा पाने की लालसा हमें जीवन में असंतुष्ट कर देती है और जो लोग मुश्किलों के सामने अपने घुटने टेक देते हैं, उन्हें निराशा प्राप्त होती है। हमें अपने पूरे जीवनकाल में हँसते-मुस्कुराते रहना चाहिए और दूसरो को भी खुश रखना चाहिए। हमें हर मुश्किलो का सामना करते हुए सफलता की सीढ़ियों को चढ़ते जाना चाहिए। हमें हर मुश्किलों और कठिनाइयों से परेशान होकर अपने जीवन को कोसना नहीं चाहिए, इसी को जिदंगी कहते हैं, अपने जीवन के हर एक पल को खुशी से जीना चाहिए क्योंकि पता नहीं कब हमारी खूबसूरत जिदंगी का अंत हो जाए, इसीलिए हमें अपने जीवन को उत्साह और उमंग के साथ जीना चाहिए। हमें परिश्रम करना चाहिए और तभी सफलता हमारे कदम चूमेंगी, क्योंकि जिदंगी एक बार ही मिलनी है, इसीलिए जिदंगी को जीये तो शान से जीयें। ♦

अत्यधिक भरोसा खतरे को जन्म देता है ।

टायरा बैंक्स

आत्मविश्वास के साथ काम करना सबसे अच्छा है , भले ही आपके पास उसके होने का कितना कम अधिकार ही क्यों ना हो ।

लीलियन हेलिमें



## मिट्टी का खिलौना (मनुष्य)

संदीप, डाटा एंट्री ऑपरेटर  
(लेवह)

मिट्टी का मैं बना खिलौना  
जीवन जैसे स्वपन सलौना,  
खुशियों में मेरा हँसना देखों  
तकलीफों में देखो रोना।  
रूकना सीखा चलना सीखा  
हालातों से लड़ना सीखा,  
बुद्धि ओर ताकत के बल पर  
दुनिया में फिर उड़ना सीखा।  
जन्म से लेकर मरने तक  
शुरु से लेकर करने तक,  
फिकर यही बस होना क्या है  
बात-बात पर रोना क्या है।  
जाग-जाग कर रातों को  
मैं समझा सबकी बातों को,  
अंधा है विश्वास यहाँ पर  
कौन भला फिर खास यहाँ पर।  
पत्थर की सब पूजा करते  
ये तेरा ये मेरा करते,  
कौन भला क्या लाया था और  
कौन किधर ले जाएगा,  
जिस मिट्टी का बना खिलौना  
उसमें ही मिल जाएँगा।♦





## बहुत याद आती है

चंद्रहास मनोज (लेखाकार)

देश है तो जनता है, जनता है तो नेता हैं  
नेता है तो गाड़ी है, गाड़ी है तो सड़के हैं  
सड़के हैं तो गढ़े हैं, गढ़े हैं तो उनको भरने के वादे हैं  
वादे करके उनकी सुधि कौन लेता है, वादा खिलाफी है तो नेता हैं।

सड़के हैं तो भीड़ हैं, भीड़ हैं तो ट्रैफिक जाम हैं  
ट्रैफिक जाम है तो धुँआ है, धुँआ है तो बीमारी है  
बीमारी है तो अस्पताल हैं, अस्पताल है तो डॉक्टर हैं  
डॉक्टर हैं तो नर्स हैं, नर्स हैं यानि की लड़कियाँ हैं  
लड़कियाँ हैं तो छेड़खानी हैं, साथ में चलती मनमानी हैं  
मनमानी जो करते हैं, नेता के लड़के हैं



नेता के लड़के हैं तो दबदबा हैं, दबदबा है तो नेता हैं।  
मनमानी हैं तो बलात्कार हैं, बलात्कार हैं तो पुलिस हैं  
पुलिस हैं तो चोर हैं, चोर हैं तो पैसा है  
पैसा है तो बिल्डिंग हैं, बिल्डिंग हैं तो बिल्डर हैं  
बिल्डर हैं तो जमीन के सौदे हैं, जमीन के सौदे हैं तो घोटाले हैं  
घोटाले हैं तो नेता है।

घोटाले हैं, तो घोटाला करने वाले हैं  
घोटाला करने वाले हैं, तो धंधे काली हैं  
धंधे काले हैं तो छानबीन वाले हैं, छानबीन यानि की सरकारी मुलाजिम हैं  
सरकारी मुलाजिम हैं तो भ्रष्टाचार हैं, भ्रष्टाचार हैं तो नेता हैं।  
सरकारी मुलाजिम हैं, तो कामचोरी हैं, तो हड़ताल है  
हड़ताल हैं तो धरना प्रदर्शन हैं, धरना प्रदर्शन हैं तो तोड़-फोड़ हैं  
तोड़-फोड़ है तो समाचार है, समाचार है तो मीडिया है  
मीडिया हैं तो नेता है।

धरना-प्रदर्शन हैं तो बाजार बंद हैं, बाजार बंद हैं तो लोग परेशान हैं  
परेशान लोग जनता हैं, जनता है तो वोट हैं,  
वोट हैं तो चुनाव है, चुनाव है तो ताकत प्रदर्शन है  
ताकत प्रदर्शन हैं तो बुथ-केपचरिंग हैं, बुथ-केपचरिंग हैं, तो अपराध हैं।  
इसलिए जब कभी वादा खिलाफी, दबदबे, घोटाले, भ्रष्टाचार, मीडिया या अपराध की बात आती  
है....हैं नेता, हमको तेरी बहुत याद आती है।♦





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 के दौरान कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 में आए निर्णायकगण एवं प्रतिभागीयों का एक दृश्य।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 में भाग लेते हुए कर्मचारी के बच्चों का एक दृश्य





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 – 'उद्घाटन समारोह',  
दिनांक 01.09.2014 ।

प्रधान महालेखाकार ( ले.व.हक. ) एवं महालेखाकार  
( ले.प. ) द्वारा द्वीप प्रज्वलन ।



युगल गीत प्रस्तुत करते हुए प्रधान महालेखाकार  
( ले.व.हक. ) के कर्मचारीगण ।





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा- 2014 - 'उद्घाटन समारोह'  
का आनंद उठाते हुए अधिकारीगण ।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह'  
का आनंद उठाते हुए अधिकारी /कर्मचारीगण ।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह' में  
एकल गीत प्रस्तुत करते हुए श्री सुभेन्दु दास, व.  
लेखाकार( ले.व.हक. ) ।





संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह' में अपने विचार प्रकट करते हुए प्रधान महालेखाकार ( ले.व हक. ) ।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा -2014- 'उद्घाटन समारोह' में अपने विचार प्रकट करते हुए महालेखाकार ( लेखापरीक्षा ) ।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 - 'उद्घाटन समारोह' के दौरान वृंदगान प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण ।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा - 2014 - 'उद्घाटन समारोह'  
का संचालन करती हुई सुश्री प्रियंका बी.गोस्वामी,  
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, ( ले.व हक. )

प्रधान महालेखाकार ( लेखा व हकदारी ) असम में  
आयोजित हिन्दी कार्यशाला, 2014 में भाग लेते हुए  
कर्मचारियों का दृश्य।



प्रधान महालेखाकार ( लेखा व हकदारी ) असम में  
आयोजित हिन्दी कार्यशाला, 2014 में कक्षा लेते  
हुए अतिथि हिन्दी अधिकारी।



## किसान

प्रतीक ढ्याल, लेखा परीक्षक

किसान अर्थात जो कर्म करे, शान से रहे और जिसमें नम्रता हो। पर बदलते परिवेश में किसान आज हाशिये पर है। प्रगति की अन्धाधुन्ध दौड़ में, औद्योगिकरण की आड़ में, धरती की गोद को हरियाली से सजाने वाले किसानों को बड़ी ही बेरहमी से बेचारा बना दिया गया है। प्रस्तुत कहानी एक ऐसे ही किसान की है, जिन्होंने कर्म करके शान से रहते हुए, बड़ा ही नम्रता से अपने सभी कर्तव्यों का निर्वाह किया है और कृषि के आधार पर परिश्रम के बल पर सारी चुनौतियों का सामना किया है।

चन्दर तड़के सुबह ही भीगी चने मुट्ठी में लिए, चबाते हुए अपने बैलों की शैले से लगा के, कंधे पे हल रख कर खेत की ओर बढ़ लिया। खेत पहुँचकर बैलों के मुँह पर जाबे लगाकर वह हल को शैले से जोड़कर जुताई शुरू करता है। मन हीं मन सोचता है कि हे भगवान इस बार फसल अच्छी हो जाए तो जमीन्दार का बाकी का कर्ज भी चुका दिया जाए, जो कि वह तब लिया था जब उसकी पत्नी विमला की तबीयत सूरज के पैदा होने के बाद खराब हुई थी। चन्दर याद कर रहा है कि किस तरह से वह जिले के सरकारी अस्पताल में पत्नी के बगल में बैठे रात भर जगता रहा था। वैसे तो अस्पताल



में दवाईयाँ मुफ्त मिलती थी पर सारी दवाईयाँ वहाँ उपलब्ध न थी, इसलिए कुछ दवाईयाँ बाहर से लेनी पड़ती थी जिनके लिए उसे जमीन्दार से उधार लेना पड़ गया था। धीरे-धीरे धूप तेज होने लगी और चन्दर पसीने से तर होने लगा। बीच-बीच में आती हवा के झोकों से उसे सुकून मिलता। चन्दर की थकान बढ़ने लगी, उसका मन था कि वह अब रुक जाए, थोड़ी देर आराम कर ले, पर फसल बोने के दिन निकल जा रहे थे, जमीन्दार का कर्ज, सूरज की पढ़ाई का कर्ज और इस महँगाई में परिवार का खर्च, ये बातें उसके जेहन में आती रही और उसके कदम चलते रहे। प्यास से उसका गला सुखता जा रहा था तभी उसने राहत की साँस ली, विमला जो खर-मेटाव लेकर आ गई थी, रोटी-आचार, प्याज के टुकड़े, पानी। चन्दर बैलों को लगाकर, मुँह धोकर खर-मेटाव करने लगा। विमला ने बताया कि जमीन्दार फिर से कर्ज के तकाजे के लिए घर आया था, और सूरज को बड़ी मुश्किल से स्कूल भेजा है क्योंकि उसके कक्षाध्यापक उसे बार-बार बाकी फीस के लिए उसे डाँटते रहते हैं जिससे वह स्कूल जाने से कतराता रहता है। चन्दर सारी बातों को चुपचाप सुनता रहा। रोटी खा के पानी पीने से उसकी कुछ थकान कम हुई। आखिरी रोटी के दो टुकड़े कर दोनों बैलों को खिलाकर फिर से काम पर लग जाता है। दोपहर को वापस घर जाने पर वह जमीन्दार के यहाँ जाके, बड़ी मित्रों के बाद उसे फसल के बाद कर्ज चुकाने का वचन देके स्कूल जाता है, और प्रधानाध्यापक से निवेदन करता है कि सूरज की फीस फसल के बाद जमा करने की मोहलत मिल जाये। प्रधानाध्यापक चन्दर की बात मान जाते हैं।

शाम को वह फिर खेत जाके बीज और उर्वरक डालता है और अगले दिन बैलों को हेंगी से लगाकर खेत को समतल करता है।

जिन दिनों खेतों का काम कम चल रहा होता है तो वह महात्मा गाँधी रोजगार योजना के तहत मजदूरी भी कर लिया करता है। फसल उगने के बाद उनकी कोमल पत्तियाँ नील गायों को बहुत लुभाती थी। दिन के वक्त तो आस-पास के खेतों के लोग, कोई न कोई फसल देखने पहुँच ही जाता था, पर रात के वक्त चन्दर को खेत में हीं खाट डाल के सोना पड़ता था, तारों जड़ी चादर के नीचे वह सोता कम, सोचता रहता अपने हालात के बारे में और रात भर में चार बार उठ-उठ के खेत के चक्कर लगाया करता था।

एक दिन शाम को जब वह मजदूरी कर ही रहा था कि सूरज उसके पास दौड़ता हुआ आया और बताया नहर में पानी बढ़ जाने से उसके खेत में खूब पानी आने लगा है।

चन्दर फावड़ा फेंक खेत की ओर भागता है। वैसे पानी तो फसल के लिए वरदान है, पानी के बिना फसल तो असम्भव है पर यदि असमय खेत पानी से डूब गया तो सारी फसल बरबाद हो जानी थी। चन्दर खेत पहुँचकर बाड़ लगाने की कोशिश करता है, पर पानी के तेज बहाव से बार बार मिट्टी बह जाती है, धीरे-धीरे अँधेरा बढ़ने लगा और चन्दर की कोशिश नाकाम होती गई। चन्दर थक चुका था, पास की मिट्टी इतनी गिली हो गई थी कि अब बाड़ लगा पाना मुश्किल लग रहा था, चन्दर के आँखों के सामने ही उसकी फसल डूबने को थी। जमीन्दार का कर्ज, सूरज की फीस और सबसे अधिक अपनी दी हुई जुबान चन्दर को बार-बार कोशिश करने पर मजबूर





कर रहे थे। आखिर कोई उपाय न मिलता देख चन्दर खुद ही पानी के मुहाने पर लेट गया। अब खेत में पानी जाना बन्द हो गया था पर चन्दर के हटते ही फिर से खेत में पानी जाने लगता। चन्दर वहीं पड़ा रहा, आज फिर तारों जड़ी नीली चादर के नीचे, ठंडे पानी से भीगा हुआ वह पड़ा रहा रात भर, नीन्द के आगोश में हल्की झपकी ही ली थी उसने, कि भोर हो गया, सारे पड़ोसी किसानों को बुलाकर विमला, सूरज के साथ खेत पहुँची, सबने मिल के बाढ़ लगाया और चन्दर को कँधे पर उठा कर घर लाए। रात भर पानी में रह जाने से चन्दर को तेज बुखार हो गया था। विमला ने चन्दर के तलवों पर तेल की मालिश की, सर पर बार-बार भीगी पट्टियाँ करती रही और काढ़ा बना के पिलाती रही। सूरज पास के डॉक्टर को बुला कर लाया और दवाईयाँ दी गई। कुछ तीन-चार



दिन ही हुए जब चन्दर काम पर वापस जाने लगा, हाँलाकि कमजोरी अब भी थी, पर मजदूरी ना करता तो फिर जमीन्दार का कर्ज और सूरज की फीस दोनों पूरे ना कर पाता।

चन्दर फसल देखने खेत पहुँचा। इस बार अच्छी फसल लहलहाई थी। मध्यम-मध्यम हवा के झोंकों में लहराती हुई हरी फसल बार-बार उसे ताजा करती और उसे उम्मीद देती कि इस बार वो कर्ज से मुक्ति पा लेगा।

अब चन्दर दिन ढलते ही सूरज के साथ किताबें लेकर बैठ जाता, सूरज से पढ़ाई की बातें करता और उसे खूब मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित करता। हालाँकि हिन्दी के अलावा किसी विषय में वह सूरज की मदद नहीं कर पाता, फिर भी वह सूरज की पढ़ाई पर पूरी नजर रखता था। हिन्दी में पद्यों की व्याख्या तो वह स्कूल के अध्यापक से भी अच्छा करता था।

इस बार पैदावार अच्छी हुई और सरकार के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि करने के कारण चन्दर अपने उगे अनाज का एक बड़ा हिस्सा सरकार द्वारा निर्धारित विक्रय केन्द्र पर बेच देता है। लगे हाथ वह जमीन्दार का कर्ज चुका के, स्कूल पहुँचता है और सूरज की पूरे साल की फीस जमा करता है। फिर बाजार से घर के लिए आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी कर घर लौटता है। विमला कर्ज अदा होने की सारी बातें सुन के राहत की साँस लेती है।

कुछ ही दिन बाद सूरज कुदता उछलता हुआ आता है, चन्दर और विमला से नई स्कूल ड्रेस और बैग की फरमाईश करता है और एक पत्रा चन्दर को थमाता है, पहली बार खर्च की आहट के बावजूद चन्दर के चेहरे पर मुस्कान है और आँखों में खुशी की चमक, आखिर सूरज कक्षा में प्रथम जो आया है इस बार। ♦

## क्यों नारी सम्मान न पाती

कुमारी आभा ,व. लेखाकार

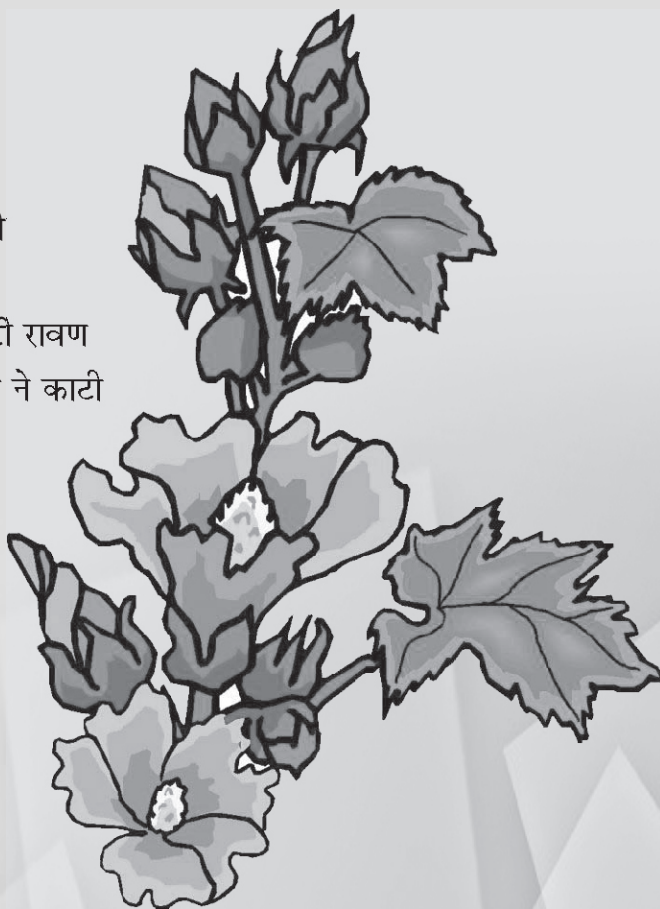
युग-युग से स्वयं को निरंतर जलाती  
कमल नयनों से आसु बहाती  
मानव मात्र की जन्मदात्री  
क्यों नारी सम्मान न पाती

तन दिया, आत्मा दी, दुध और  
नौ माह सींचा रक्त से  
दे दिया सब कुछ, किसी कर्ण की भांति  
क्यों नारी सम्मान न पाती

गौ माता पूजनीय है,  
जन्मभूमि आँगन की शोभा बढ़ाती  
फिर मनुष्य क्यों ऐसी जाति  
जिसमें नारी सम्मान न पाती

गौतम ने अहिल्या को फटकारी  
राम ने सीता को त्यागा  
छल इन्द्र का था और था कपटी रावण  
फिर सजा क्यों अहिल्या-सीता ने काटी  
बात कुछ समझ न आती  
क्यों नारी सम्मान न पाती

जुआ खेला पांडवों ने  
दांव लगाया पांचाली को  
भरी सभा देखती रही  
और पाँच पतियों के रहते  
द्रोपदी बस चीखती रही  
क्यों है पुरखों की ऐसी थाती  
जहाँ नारी सम्मान न पाती



नारी के आँचल में दाग लगाए जो  
जीते हैं शान से, सिर उठा के  
बेकसूर है जो, पीड़ित-नारी  
क्यों कलंकिनी कहलाती  
प्रश्न यही हृदय में बाकी  
क्यों नारी सम्मान न पाती

पिता का आँगन छोड़  
पति के घर  
लाख दुःखों पर भी  
सुखी संसार बसाती

उस नारी का मोल क्या है  
चंद रूप्यों से भी कम है  
अगर नहीं, तो क्यों लौटते बाराती  
या कोई बहु दहेज के लिए जला दी जाती  
भ्रुण हत्या से उजड़ी कोख है पूछती  
मानव मात्र की जन्मदात्री  
क्यों नारी सम्मान न पाती ♦

बूंद की सार्थकता इसी में है कि उसका अस्तित्व नदी में विलीन हो जाए। -

अल गजाली

जीवन निकुंज में तुम्हारी रागिनी बजती रहे, सदा बजती रहे। हृदय कमल में तुम्हारा आसन विराजित रहे, सदा विराजित रहे। -

रविन्द्र नाथ टैगोर

खाने और सोने का नाम जीवन नहीं। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ने का। -

प्रेमचंद

जीना भी एक कला है, बल्कि कला ही नहीं तपस्या है। -

हजारी प्रसाद द्विवेदी

जीवन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नहीं। -

जवाहरलाल नेहरू

मौत जब तक नजर नहीं आती।

जिन्दगी राह पर नहीं आती।। -

जिगर



## हिन्दी की तुम डोर संभालो

विष्णु दे, वरि. लेखापरीक्षक

जागो ! देश के कर्णधारों,  
हिंदी की तुम डोर संभालो,  
कृष्ण सरीखे बनकर तुम,  
हिंदी रूपी रथ को हांको ।

संस्कृत है हिंदी की जननी,  
इस माँ को तुम पहचानों,  
माँ का पूजन अर्चन करके,  
हिंदी बेटी को तुम जानो ।

गले लगाया हिंदी को तो,  
विघ्न बाधाएँ कितनी झेली,  
थोपी गई हमपेँ अंग्रेजी,  
और गुलामी देश की फैली ।

हिंदी को अपनाने से ही,  
देश का स्वाभिमान जगेगा,  
उन्नत होगा राष्ट्र हमारा,  
वैभवशाली तभी बनेगा ।

संतो ने भी इस धरती पर,  
हिंदी का प्रचार किया,  
अपनी कृतियों द्वारा ही,  
हिंदी का प्रसार किया ।

थोपी गई भाषा पर हमें ,  
आज इतरान मंजूर नहीं,  
देश स्वालम्बी तब कहलाएगा,  
जब हिंदी सबको जगाएगा ।♦





## हस्ताक्षर एवं लिखावट-व्यक्तित्व की एक झलक

डीकान्त लाल,  
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

लिखावट व्यक्तित्व की पहचान है। इससे व्यक्ति के अंदर झाँका और उसकी विशेषताओं को देखा जा सकता है। लिखावट को अंतःकरण की अभिव्यक्ति भी माना जाता है। इसमें हमारे मनोभाव छिपे होते हैं। विशेषज्ञ इन भावों को शब्दों की आड़ी-तिरछी रेखाओं में खोजते हैं और व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हैं। विशेषज्ञ निम्नलिखित तरीकों के आधार पर विश्लेषण करते हैं—

- (1) मूवमेन्ट- इसमें कलम का हेर-फेर, लिखने की गति आदि का आकलन किया जाता है। साधारणतया बच्चों और महिलाओं की लिखावट धीमी होती है। अनुभवी व्यक्तियों के लिखने की गति (मूवमेन्ट) अच्छी होती है।
- (2) इनक्लीनेशन- इसमें लिखने की ढाल एवं शब्दों की चाल आदि देखी जाती है। लिखावट दाईं या बाईं ओर है या उपर-नीचे, सीधा-तिरछा ढाल लिए हैं। इस सबका अपना अलग परिचय होता है।
- (3) स्कील- जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है उनके अक्षरों में कंपन देखा जाता है। सुगढ़ व्यक्तित्व वाले की लिखावट सुलेख एवं सुन्दर होती है।
- (4) स्पीड- इसके अन्तर्गत लिखावट का विश्लेषण किया जाता है। लिखते समय कलम पर दिए प्रेशर से अक्षरों की आकृति छोटे-बड़े, चौड़े एवं संकुचित हो जाते हैं।
- (5) क्युवर- इस पद्धति में कलम की कंपन एवं लिखावट की विवेचना की जाती है। इसमें अक्षर अत्यन्त छोटे होते हैं।
- (6) विड्थ- इसमें अक्षरों के आकार, आकृति, उसके भाग, मोड़ आदि के आधार पर विश्लेषण किया जाता है।
- (7) टर्मिनल क्रासिंग- इसमें अंग्रेजी के टी अक्षर से व्यक्तित्व की पहचान की जाती है। क्योंकि ऐसा माना



जाता है कि टी अक्षर सबका अलग होता है और उसकी नकल नहीं की जा सकती है ।

- (8) स्पेश-दो अक्षरों के बीच, दो शब्दों के बीच एवं बड़े-छोटे अक्षरों के बीच का स्पेश हरेक व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होता है ।
- (9) साईज-अक्षरों, शब्दों के साईज के आधार पर व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाता है ।

व्यक्ति यदि किसी के सबसे नजदीक एवं पास होता है तो वह उसका नाम होता है, इसलिए वह अपने नाम के हस्ताक्षर में अपने अस्तित्व को उड़ेल देता है और उसके सारे मनोभाव उसमें छपते चले जाते हैं । इसलिए हस्ताक्षर विशेषज्ञ इन सूक्ष्म चीजों को बड़ी आसानी से पहचान लेता है एवं उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण एवं व्याख्या कर लेता है । हस्ताक्षर विशेषज्ञ के अनुभव के आधार पर लोगों के हस्ताक्षर, लिखावट को देखकर उसके व्यक्तित्व की झलक पा सकते हैं ( जो शत् - प्रतिशत सही भी नहीं हो सकता है ) -

- (1) हस्ताक्षर में यदि नाम स्पष्ट हो तो कहा जाता है कि ऐसा व्यक्ति एकनिष्ठ एवं समय का पाबंद हो सकता है ।
- (2) हस्ताक्षर करते समय सभी अक्षर एक दूसरे से जुड़े हों तो व्यक्ति दबंग, साहसी एवं अत्यन्त चालाक होता है । ऐसा व्यक्ति किसी भी समय कुछ भी कर सकता है ।
- (3) शान्त अवस्था में हस्ताक्षर स्पष्ट एवं संतुलित अक्षर होते हैं ।
- (4) सुख एवं विजय में ये अक्षर स्पष्ट और सीधे होते हैं तथा अधिक गहराई से उकेरे होते हैं
- (5) आनन्द और उल्लास भरे वातावरण में व्यक्ति के अक्षर उड़ते हुए प्रदर्शित होते हैं ।
- (6) दंभी एवं सत्ताप्रिय व्यक्तियों के अक्षर गहरे एवं अलग किस्म के नजर आते हैं ।
- (7) दुःख, परेशानी, बीमारी, आघात के समय मन उद्वेलित एवं अशांत होता है जिसका प्रभाव लिखावट पर पड़ता है । ऐसे समय व्यक्ति असमान और असंबद्ध हस्ताक्षर करता है ।
- (8) लिखावट में जिन अक्षरों के उपर कोई चिह्न नहीं होता है ऐसी लिखावट वाले व्यक्ति अपनी बात सीधी एवं साफ बोलने वाले होते हैं । ये सामाजिक रूप से अत्यन्त संवेदनशील होते हैं । इनको बातें जल्दी चुभ जाती है तथा ये इन बातों को सोचते रहते हैं ।
- (9) जिन अक्षरों ( आई, जे ) के उपर बिन्दु साफ-सुथरे लगे होते हैं, वे नैतिक होते हैं । इन पर भरोसा किया जा सकता है क्योंकि वे विश्वसनीय होते हैं ।
- (10) अक्षरों के उपर गोल बिन्दु डालने वाले व्यक्तियों की इच्छाएँ सबसे जुदा होती है । इनकी इच्छाएँ एवं अभिलाषाएँ किसी अन्य से नहीं मिलती है । यही उनकी खास विशेषता होती है ।
- (11) जिनके अक्षर लहरदार एवं साफ होते हैं वे मनोरंजनप्रिय विनोदी स्वभाव वाले होते हैं । ऐसे व्यक्ति जिन्दगी को भारवत नहीं लेते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी सहज बने रहते हैं ।



- (12) जिनके शब्दों के अक्षर अलग-अलग होते हैं उनमें अंतर्दृष्टि क्षमता विकसित होती है। ये गंभीर विचारों के प्रति आकर्षित होते हैं तथा समस्याओं के मूल तक पहुँचने का सामर्थ्य रखते हैं।
- (13) चुस्त एवं जुड़ा अक्षर प्रदर्शित करता है कि व्यक्ति अपने उद्देश्य के प्रति सतत सचेष्ट एवं क्रियाशील होते हैं। इनमें स्थायित्व अधिक होता है। ये जिस काम को शुरू करते हैं उसे पूर्णता देने तक इसमें डटे रहते हैं।
- (14) जिनके अक्षरों की लाईन लूप बनाकर चलती है वे अत्यन्त संवेदनशील होते हैं और अपनी आलोचनाओं से डरते - घबराते हैं। आलोचनाओं के डर से किसी अच्छे कार्य को यों ही छोड़ देते हैं। इन्हें हमेशा डर सताता रहता है कि इन्हें लोग क्या कहेंगे।
- (15) अक्षरों के उपर में जो एकदम पतली बिन्दु डालते हैं वे किसी की बातों का ज्यादा तवज्जों नहीं देते तथा किसी भी चीज को पूरी तरह से एवं सरलता से समझ जाते हैं। ♦

आश्चर्य की बात है कि लोग जीवन को बढ़ाना चाहते हैं, सुधारना नहीं।

सुकरात

आज ऐसे जियो जैसे यह अन्तिम दिन हो।

बिशप कैर

जीवन अपनी इच्छा अनुकूल चलना नहीं, ईश्वर की इच्छा के अनुकूल चलने में है।

ताल्सताँय

कहीं ऐसा न हो कि जिन्दगी कि अच्छी चीजें, जिंदगी की सबसे अच्छी चीजों को ख़तम कर दें।

वाल्तैयेर

जब तक जीवन है, तब तक जीवन कला सीखते रहो।

सेनेका

जीवन एक बाजी की तरह है। हार-जीत तो हमारे हाथ में नहीं है, पर बाजी का खेलना हमारे हाथ में है।

जेरेमी टेलर



## माँ

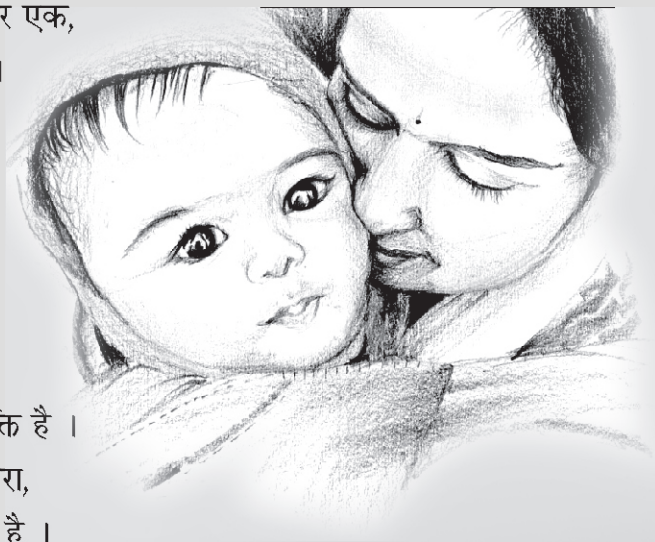
धीरेन्द्र प्रताप सिंह , लेखापरीक्षक

दुनिया की इस भीड़ में माँ,  
तू ही एक साथी सच्ची है ।  
अपने इस नालायक बेटे की,  
माँ तू क्यों इतनी अच्छी है ?

माँ तू जब साथ में होती थी,  
तब मैं ना किसी से डरता था ।  
तेरे बिन तो स्कूल के हर एक,  
घंटे में रोया करता था ।

मेरी बस एक चीख से ही,  
तेरे आसूँ आ जाते थे ।  
ओ माँ तेरी फूँक से ही बस,  
सब दर्द कहाँ खो जाते थे ।

माँ तू ही मेरी प्रेरणा है,  
हर मुश्किल में मेरी शक्ति है ।  
तुझसे दुनिया में प्यार भरा,  
तुझसे ही मन की भक्ति है ।



भगवान को न मैं जानू माँ,  
बस तुझसे प्यार मैं करता हूँ ।  
फिर भी उस अंतर्दामी से,  
मैं एक निवेदन करता हूँ ,

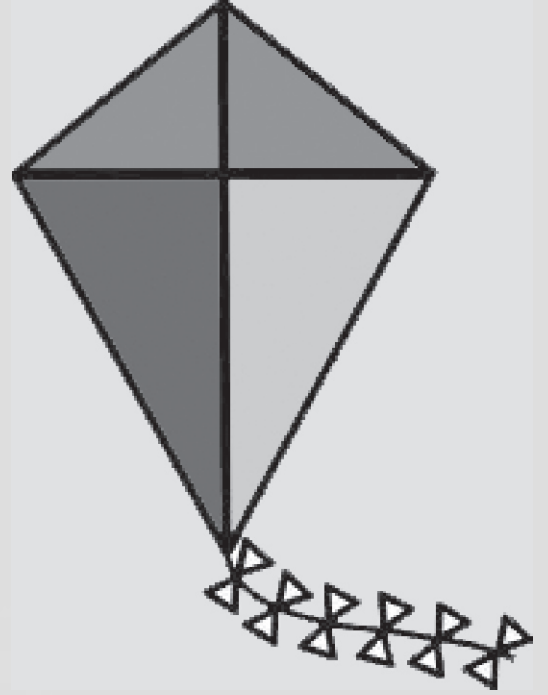
ये प्यार मुझे देती है माँ वो,  
कभी ना रोने पाये वो,  
हर पल बस रहे सामने मेरे,  
दूर कभी ना जाये वो ।♦



## पतंग

रत्ना जोयारदार,  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं एक अति साधारण  
सफेद बेरंगी पतंग,  
मन में अधिक चाहत है  
आसमान में उड़ने की,  
बदन में नहीं सजावट  
नहीं है रंगों की रौनक,  
चलना मेरा मूल मंत्र है  
जुनून है ऊपर उठने की ।  
मैं एक अति साधारण  
सफेद बेरंगी पतंग,  
दिल की गहरी तमन्ना है  
आसमान को छूकर देखूँ  
मन में है चरम आकांक्षा  
दूसरे देश में चली जाऊँ,  
मन में है चाह सूरज को  
बादल की तरह ढक दूँ ।  
तूफान की अभिलाषा है  
मेरे लक्ष्य को भ्रष्ट करना,  
बारिश की ख्वाहिश है  
मुझे तहसनहस करना,  
रूकावट को तुच्छ करके  
मन में लिए नई उमंग,  
आसमान में उड़ती हुई  
मैं सफेद बेरंगी पतंग ॥♦



## ऐतिहासिक नालन्दा की सैर

अमर जीत कुमार, लेखा परीक्षक

हमारा पावन देश भारत यू तो महत्ताओं तथा विशिष्टताओं का अनोखा समागम लिये इतराता है। इसकी प्रमुख वास्तु विहारों में एक शिक्षा की विशिष्ट पहचान, गरिमामयी शान देखने का मेरे मन में विचार आया। तब मैं विश्व की महान धरोहर नालन्दा विश्वविद्यालय के भग्नावशेषों को देखने बिहार राज्य के पटना जिले से दक्षिण-पश्चिम में लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नालन्दा जिले में पहुँचा, जो राजगीर से 13 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में है। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मानों मेरे मन में तरह-तरह के विचार प्रकट हो रहे थे कि इस विश्वविद्यालय को इसी देश में क्यों होना था। यह क्यों विश्व विख्यात था तथा इसकी पहचान के लिए कभी हमारा देश क्यों जाना जाता था फिर क्या हुआ कि इस विश्वविद्यालय को तोड़ दिया गया।

अब हम इस विश्वविद्यालय की सारी व्यथा सुनाने की चेष्टा करते हैं। इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेष के द्वारा प्राप्त जानकारी तथा नालन्दा संग्रहालय से प्राप्त जानकारी एवं स्थानीय लोगों तथा आसपास के समस्त कलाकृतियाँ से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की रोचक जानकारी के अनुसार इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की रोचक



जानकारी जो हमें प्राप्त हुई। इसकी व्याख्या आगे किया जा रहा है।

उपत्य और सारीपुत्र को जन्म स्थान नालक को ही नालंदा कहा गया। यह प्राचीन काल का एक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र हुआ करता था। 6ठी सदी ईसा पूर्व में ही भगवान बुद्ध के काल से ही नालन्दा के प्रमाणिकता के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। नालन्दा सर्वप्रथम एक बौद्ध विहार था जिसकी स्थापना गुप्त सम्राट कुमार गुप्त ने की थी। नालन्दा की खुदाई के पश्चात समुद्रगुप्त के शासन का एक ताम्रपत्र और कुमार गुप्त के शासन का एक सिक्का भी प्राप्त हुआ है। इस विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र, व्याकरण, चिकित्साशास्त्र, तर्कशास्त्र, खगोलशास्त्र पठन-पाठन के प्रमुख विषय थे। "नालन्दा विहार" महत्वपूर्ण विहारों में से है। यहाँ एक दूसरे के उपर बनी दिवारे, फर्शों तथा नालियों से यह प्रतीत होता है कि यह क्रमशः 9 बार बना और बिगड़ा। ये छोटे-छोटे स्तूपों से घिरा हुआ एक चौकोर बुद्ध मंदिर है जो सात बार एक दूसरे से बड़ा बना है। प्रारंभ के तीन चरण आज भी धरती के नीचे दबे हैं। पाँचवाँ चरण सबसे सुन्दर तथा सुरक्षित है। परवर्ती चार चरण दिखाई देता है। पाँचवे चरण के चारों कोणों स्तूप के आकार बने हैं और दिवारों पर बुद्ध और बोधि स्तवों की ब्रीज की गुप्त शैली में कलात्मक मूर्तियों का निर्माण किया गया है। यहाँ अनेक मनौती स्तूप और चैत्य बने हैं। छोटे स्तूपों से घिरे इस चैत्य के बीच में प्रधान मंदिर और चारों कोनों पर छोटे मंदिर हैं। यह चैत्य दो बार बना। ईंटों द्वारा निर्मित भगवान बुद्ध की इस मंदिर में गज की बनी विशालकाय खंडित प्रतिमा भूमिस्पर्श विशालकाय मुद्रा में प्रतिस्थापित है। कन्नौज के राजा हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय को स्थायी तौर पर 100 गाँवों की मालगुजारी भेंट किया था जिससे यहाँ पढ़ने वाले शिष्य तथा गुरुओं का जीवन चलता था। यहाँ से बड़े रोचक तथा तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। जहाँ पर विश्व के बहुत सारे देशों से विद्यार्थीगण पढ़ने आते थे। ह्वेनसांग जो एक चीनी यात्री था लगभग 16वर्षों तक नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण किया था।

इस विश्वविद्यालय से लगभग 1.5 किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित प्रमुख द्वार पर द्वारपाल होती थी। जो खुद एक प्रकान्ड विद्वान होते थे जिन्हें दर्शनशास्त्र की विशेष विधा प्राप्त थी। सर्वप्रथम वे लोगों को पढ़ाई के इच्छुक होते थे, की मानसिक क्षमता की परख करते थे। जो व्यक्ति द्वारपाल से प्रश्नों के वाद विवाद का उत्तर देता था उसे ही इस विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होता था। वरना विद्यार्थियों को यही वापस आना पड़ता था। जिस विद्यार्थी का एक बार दाखिला हो जाता था वे निःशुल्क शिक्षा, भोजन, पोशाक पाने के पात्र होते थे। इस महान विश्वविद्यालय का यह महत्वपूर्ण अच्छाई था। यहाँ पर लोगों के अनुशासन की काफी पहल थी। यहाँ पढ़ाने के लिए भी सारे विश्व से जाने माने विद्वान आते थे तथा सबसे खास बात यह थी कि इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के चयन, पढ़ाई, खान-पान तथा सभी साधनों में किसी प्रकार के भेद-भाव नहीं किए जाते थे। यह विश्वविद्यालय काफी अनोखा एवं अनुपम था जो शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

इस विश्वविद्यालय को दिल्ली सल्तनत के काल में अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में बख्तियार



खिलजी ने इसको बर्बाद कर दिया जो कि सिर्फ एक विद्वेष की भावना थी और हमारे देश की प्राचीनतम गरिमामयी विश्वविद्यालय का अंत हो गया । ऐसा कहा जाता है कि बख्तियार खिलजी की सेना की टुकड़ी यहाँ आकर रुकी तथा आसपास के क्षेत्रों को तबाह कर दिया । इस विश्वविद्यालय के पुस्तकों के पन्नों से बख्तियार खिलजी के सारे सेनाओं के लिए रसोई के लिए 6माह तक का ईंधन बनाया गया । इस प्रकार हमारे देश की शिक्षा का केन्द्र कहे जाने वाले विश्वविद्यालय की सभी अच्छाईयों का अन्त हो गया । और आज हम देशवासी इस आधुनिक तकनीक युक्त विश्वविद्यालय की शिक्षा से वंचित हो गए ।

आज हमारे देश में आधुनिक तकनीक का काफी अभाव है जो हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था की भी कमी की एक पहचान है । इस विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के महत्वपूर्ण स्थान होने से परिस्थिति का समाधान किया जा सकता है जो अब भी जन जीवन की चेतना जागृत कर सकता है । जब हम इस महत्वपूर्ण स्थान को देखते हैं तो यह एहसास हुआ कि सचमूच यह हमारे देश का एक प्रतिभाशाली तथा महत्वपूर्ण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु था । इस प्रतिभाशाली विश्वविद्यालय को पुनः एक विश्वस्तरीय महत्वपूर्ण शिक्षा का केन्द्र बनाने के लिए केन्द्र सरकार, बिहार सरकार तथा विश्व के भी प्रमुख सरकारों की ओर से प्रयास किया गया है । सबसे खास बात यह है कि इस विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था कोई आम विश्वविद्यालय जैसा नहीं है बल्कि इसके पठन — पाठन तथा शैक्षणिक पैमाना विस्तृत स्तर का होगा जो इस गरिमाशाली ऐतिहासिक विश्वविद्यालय को पुनः एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में योगदान देगा । इस प्रकार हम इस ऐतिहासिक यात्रा को समाप्त करते हैं ।♦

जीवन का रहस्य भोग में नहीं पर अनुभव के द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है।

मनुष्य जीवन अनुभव का शास्त्र है।

जो दूसरों के जीवन के अंधकार में सुख का प्रकाश पहुंचाते हैं, उनका इस संसार से कभी नाश न होगा, वे अमर हैं।

विवेकानंद

विनोबा भावे

स्वेट मार्टिन





## दोस्ती

कौशल कुमार, लेखापरीक्षक

मानों तो यारों के संग ठिठोली का नाम हैं दोस्ती ।  
 दुनिया में लोगों की पहचान है दोस्ती ।  
 दिया जो बुरे वक्त में साथ, उसी का तो नाम है दोस्ती ।  
 सुदामा की दुनिया में कृष्ण का पैगाम है दोस्ती ।  
 प्यारों की महफिल ही हँसी शाम है दोस्ती ।

ये बनाए तो तकदीर बनती है,  
 बिगड़ जाए तो तबाही का नाम है दोस्ती ।  
 मस्तियों की झुर्रियाँ हैं, मौजों के फब्बारें हैं,  
 झुमती कलियों की पहचान है दोस्ती ।  
 क्या भला क्या बुरा, सबको सुन कर भूला,  
 इसी अच्छाइयों का नाम हैं दोस्ती ।

मत कहो क्या पाया, क्या खोया,  
 यदि दोस्तों के संग मुस्कुराया तो इसी का नाम हैं दोस्ती ।  
 शायरों की ताकतों में, सुर वालों की तान में,  
 कव्वालों की आवाज में पहचान है दोस्ती ।  
 यू मानों तो दिल्ली का नाम है दोस्ती ।  
 हँसियों की वादियाँ हैं, जीवन की जम्हाईयाँ हैं,  
 महफिलों से सजी एक पहचान हैं दोस्ती ।  
 यादों की महफिल में, ख्वाबों की सुरों में,  
 तनहाईयों की पहचान हैं दोस्ती ।

मदमस्त सावन के झूलों की उन्माद, परिमुक्त पावन सा भोला  
 वो परिहास लोगों की सासों की पहचान है दोस्ती ।  
 मानों तो यारों के संग ठिठोली का नाम है दोस्ती ।♦



## कोशिश करने वालों की

सौरभ कुमार, लेखाकार

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।  
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,  
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।  
मन का विश्वास रंगों में साहस भरता है,  
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।  
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।  
असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करें,  
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करें।  
जब तक न सफल हों, नींद चैन को त्यागें तुम,  
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागें तुम।  
कुछ किए बिना ही जय जय कार नहीं होती,  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।♦

जीवन की लम्बी यात्रा में,  
खोये भी हैं मिल जाते,  
जीवन है तो कभी मिलन है,  
कट जाती दुःख की रातें।

जयशंकर प्रसाद



## ताजा खबर

सुदीपा चक्रवर्ती, लेखाकार

गांधी जवाहर के देश में  
यह क्या हो रहा है,  
देश में राष्ट्र भाषा हिन्दी का  
निष्कासन क्यों हो रहा।  
विद्यालय में हिन्दी विषय  
अनिवार्य होकर रह गया,  
पूर्ण रूप से भारत अभी भी  
अंग्रेजी चंगुल में फँस गया,  
हिन्दी दिवस व हिन्दी पखवाड़े  
का भी आयोजन किया गया,  
जिसमें हिन्दी को उचित दर्जा देने का  
कोरा आश्वासन दिया गया।  
ताजा खबर, हिन्दी भाषी विद्यार्थी को  
विद्यालय में प्रवेश न दिया गया  
अंग्रेजी में गिट-पिट करने वालों को,  
सर आँखों पर बिठाया गया।♦



जहाज समंदर के किनारे सर्वाधिक सुरक्षित रहता है। मगर क्या आप नहीं जानते कि उसे किनारे के लिए नहीं, बल्कि समंदर के बीच में जाने के लिए बनाया गया है।

माया एंजिलो

अगर तुम किसी चीज को पसंद नहीं करते हो तो उसे बदल दो। अगर उसे बदल नहीं सकते तो अपना रवैया बदल दो।

ऐल्बर्ट आइन्स्टीन



## हिंदी के अच्छे दिन लायेंगे

गणेश शर्मा (लेखाकार)

मैं अपनी मातृभाषा "हिन्दी" के विकास-प्रसार के बारे में बाते कर रहा हूँ। एक समय था, जब देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक कभी हिन्दी का बोलबाला सातवें आसमान पर हुआ करता था, वहीं आज इस भाषा को अपने अस्तित्व के लिए जुझना पड़ रहा है। हम सभी लोग शायद भूल चुके हैं कि ब्रिटिश शासक लार्ड मैकाले ने अपनी कुटनीति के तहत ही भारत पर अपनी शासन कायम रखने के लिए अंग्रेजी थोपी थी और हमारी भाषा संस्कृति पर सुनियोजित ढंग से प्रहार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी शासकीय भाषा बनी और हिन्दी को गुलामी का दर्जा मिला। जो आज भी बदसुलकी का जीवन जी रहा है।

एक बात सही है, कि आज के नये दौर में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए नये-नये तरीके अपनाये जा रहे हैं। आज, एक तरफ कंप्यूटर के जरिए अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करके इसे बढ़ावा दिया जा रहा है, तो दूसरी तरफ हिन्दी की कक्षा में पढ़ने वाले छात्र प्रवेश अनुमति चाहते हैं, तो कहते हैं "में आई कम इन सर" और हमारे हिन्दी शिक्षक भी बड़े शान से "यस कम इन" बोलकर अनुमति देते हैं, इसका दुखद पहलु तो यह भी है कि जो लोग हिन्दी से जुड़े हुए हैं या विकास करने का मार्गदर्शन दिखाते हैं वह स्वयं भी इसका अनादर करने से बाज नहीं आते।

अंग्रेजी भाषा आज इतनी भारी पड़ रही है, कि घर में बच्चे जब "टुविंकल-टुविंकल लिटिल स्टार" की कविता सुनाता है तो सीना गर्व से फूल जाता है, इतना ही नहीं अधिकांश लोग घर में घुसते ही बड़े चाव के साथ हिन्दी फिचर या गाने लगाते हैं और आराम कुर्सी पर बैठ कर इसका आनंद उठाते हैं, वही लोग घर से बाहर निकलते ही, अंग्रेजी शब्द का प्रयोग ऐसे करते हैं मानो वे अंग्रेजी के अलावा कुछ जानते ही नहीं। इसका कारण यह कि हम सभी भारतवासी अंग्रेजी बोलने वाले को विद्वान और सभ्य समझते हैं, वही पर हिन्दी बोलने या प्रयोग करने वाले हीन भावना से देखते हैं। आज दिन-प्रतिदिन हिन्दी भाषा का ज्ञान औपचारिकता तक सिमट गया है। विशेष तौर पर युवाओं के बीच हिन्दी जैसे गुम सी होती जा रही है। आज सरकारी कार्यालयों और स्वायत्





संस्थानों में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सरकार नई-नई योजना और प्रोस्ताहन दे रही है। प्रत्येक वर्ष हिन्दी पखवाड़ा मनाकर सभी को जागृत करने का प्रयास किया जा रहा है। पखवाड़ा खत्म होते ही हिन्दी के महत्व को भुलना नहीं चाहिए। जब भी कार्यालयों में हिन्दी सिखने या इससे संबंधित कोई कार्य करने के लिए कहा जाता है, तो सभी के चेहरे पर पसीने की लकीरें दिखाई देने लगती हैं। वे ऐसे व्यवहार प्रकट करते हैं मानों उन्हें हिन्दी सिखने नहीं, अलाद्दीन का चिराग लाने को कह दिया गया हो और वे इससे पीछा छुड़ाने का बहाना करते हैं।

आखिर हम सभी भारतवासी अपनी मातृभाषा के प्रति इतने उदासीन क्यों होते जा रहे हैं। एक तरफ "हम हिन्दी है, वतन है, हिन्दुस्तान हमारा" का नारा देते हैं वही दुसरी तरफ इसका प्रयोग करने में शर्मींदगी महसूस करते हैं। अगर यही सिलसिला चलता रहा तो हमारे हिन्दी के अच्छे दिन कब आयेंगे। अच्छे दिन लाने के लिए हम सभी को इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना होगा और ज्यादा से ज्यादा हिन्दी में लिखने-पढ़ने और कार्यालयों में इसका प्रयोग करना होगा, तभी हिन्दी के अच्छे दिन आ सकते हैं और इस नारे को हमेशा अपने मन में समेटे रखना होगा।

"हम हिन्दी ही अपनायेंगे, इसके अच्छे दिन लायेंगे।

हिन्दी भारत की भाषा है, हम दुनिया को दिखायेंगे।।"♦

प्रवृत्ति की कमजोरी चरित्र की कमजोरी बन जाती है।

विंस्टन चर्चिल

नजरिया एक छोटी सी चीज है जो बड़ा अंतर डालती है।

आस्कर वाईल्ड

नैतिकता महज एक रवैया है जो हम ऐसे लोगों के प्रति अपनाते हैं जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से नापसंद करते हैं।

जोएल ओस्टीन

उपलब्धि से अधिक और कोई भी चीज आपके अन्दर आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास नहीं पैदा करती।

थोमस कार्लैले

सफलता के लिए आत्म-विश्वास आवश्यक है, और आत्म-विश्वास लिए तैयारी।

आर्थर ऐश



## नाम बड़े, हस्ताक्षर छोटे

अनिल कुमार झा, लेखापरीक्षक

प्रगति राष्ट्रभाषा करे, यह विचार है नेक  
लेकिन आई सामने, विकट समस्या एक  
विकट समस्या एक, काम हिन्दी में करते  
किन्तु शार्ट में हस्ताक्षर, करने से डरते  
बोले "काशीनाथ" जरा हमको बतलाना  
दोनों आँख होते हुए, लिखूँ में "काना" ।

इस तरह से और भी, कर सकते हैं तर्क  
प्रोफेसर या प्रिंसिपल, अफसर, बाबू, कर्ल्क  
अफसर, बाबू, कर्ल्क, होय गड़बड़ घोटाला  
डाक्टर "नाथु लाल" करे हस्ताक्षर "नाला"  
कह 'काका' बतलाओ क्या संभव है, ऐसा  
लाला भैरों सिंह लिखे अपने को भैंसा ।

परिवर्तन घनघोर है, बदल जाएँगी कौम  
डोंगर मल संक्षिप्त में, लिख जाएँगे डोंम  
लिख जाएँगे डोंम, नाम असली खो जाएँ  
उजले कांठी लाल किंतु कहलाएँ काला  
भैय्या भाई लाल पुकारे जाए भाला ।

अच्छे- अच्छे नाम भी हो जाएँ बदनाम  
जबकि हरिहर राम को, लिखाना पड़े हराम  
लिखना पड़े हराम, किसी का क्या कर लेंगे  
चिढ़ा-चिढ़ाकर गज धारी को गधा कहेंगे  
कहे "काका" कवि बाबु लाल बनेंगे बाला  
पंडित प्यारे लाला लिख जाएगे प्याला



हिन्दू ईश्वर दत्त है वे लिखेंगे ईद  
 लाला लीला दत्त जी, बन जाएंगे लीद  
 बन जाएंगे लीद, मजे तो तब आएंगे  
 तेजपाल जब तेली कहलाएंगे  
 कहे "काका" कवि होली लाल बनेंगे होला  
 बाबु छोटे लाल लिखें जाएंगे छोला ।

जान बुझकर व्यर्थ ही, क्यो होते बदनाम  
 उतना दुखदायी बने, जितना लंबा नाम  
 जितना लंबा नाम, रखो छोटे से छोटा  
 दो अक्षर से अधिक नाम होता है खोटा  
 सुक्ष्म नाम पर कभी नहीं पड़ सकता डाका  
 काका को उल्टों पल्टो, फिर भी रहेंगे "काका" ।।♦

इस जीवन का हर दिन एक कोरा कागज है। इस कागज पर श्वास रूपी स्याही और समझ  
 रूपी कलम से आप जो चाहे लिख सकते हैं।

प्रेम रावत

बड़े काम करने के लिए आत्मविश्वास पहली अनिवार्यता है।

सैम्युएल जोंसन

खुद पर भरोसा रखो। अपनी क्षमताओं पर विश्वास करो। बिना अपनी शक्तियों में  
 एक विनम्र लेकिन उचित आत्मविश्वास के तुम सफल या प्रसन्न नहीं हो सकते।

नोर्मन विन्सेंट पील

निष्क्रियता संदेह और भय को जन्म देती है कार्रवाई विश्वास और साहस को।

डेल कार्नेगी



## बनूँ तो मैं क्या बनूँ

रिमी हालोई  
सुपुत्री- सरवेश्वर हालोई, लेखाकार

बनूँ तो मैं क्या बनूँ  
सब कहते हैं अलग-अलग,  
बनूँ तो मैं क्या बनूँ।  
पापा कहते हैं अफसर,  
माँ कहती है डाक्टर,  
पर बनूँ तो मैं, क्या बनूँ।  
भाई कहता है, इंजिनियर  
बहन कहती है, वैज्ञानिक  
पर बनूँ तो मैं, क्या बनूँ।  
मन में सोच आयी, कि मैं टिचर बनूँ।♦





## कष्ट से जीत की प्राप्ति

प्रतिमा मजुमदार, व.लेखाकार

कष्ट से जीत की प्राप्ति  
कष्ट, कष्ट, कष्ट  
जीवन के हर पथ में कष्ट  
हर राह में है कष्ट  
कष्ट काली, दुखभरी।  
दुख में न तुम डरो।  
हारोगे तो मरोगे  
साहस करोगे तो जीतोगे।  
कष्ट, कष्ट, कष्ट  
जिन्दगी के हर पथ में है कष्ट  
और इसी से है जीत की प्राप्ति  
इसके बिना न कोई शांति  
इसलिए तो कहा गया है,  
कष्ट से होती है, जीत की प्राप्ति।♦



अपनी क्षमता को पहचानकर और उस पे विश्वास कर के कोई एक बेहतर दुनिया बना सकता है।

दलाई लामा

यदि आप एक बार अपने साथी नागरिकों का भरोसा तोड़ दें, तो आप फिर कभी उनका सत्कार और सम्मान नहीं पा सकेंगे।

अब्राहम लिंकन

## "ममता की आस"

रंजीत गुप्ता, लेख्यापरीक्षक

वह प्राइमेरी स्कूल की टीचर थी। सुबह उसने बच्चों का टेस्ट लिया था और कापियाँ देखते- देखते उसके आँखों से आँसू टपकने लगे। उनके पति वही लेटे टी.वी देख रहे थे। अपनी पत्नी को रोते देख उन्होंने रोने का कारण पूछा ! वह बोली, सुबह मैंने बच्चों को "मेरी सबसे बड़ी इच्छा" विषय पर कुछ पंक्तियाँ लिखने को कहा था। एक बच्चे ने इच्छा जाहिर की है कि भगवान उसे टेलिविजन बना दें। यह सुनकर पतिदेव हँसने लगे। वह बोली, आगे तो सूनो ! बच्चे ने लिखा है- यदि मैं टीवी बन जाऊँगा तो घर में मेरी एक खास जगह होगी और सारा परिवार मेरे इर्द- गिर्द रहेगा। जब मैं बोलूँगा तो सारे लोग मुझे ध्यान से सुनेंगे। मुझे रोका-टोका नहीं जाएगा और न ही उल्टे सवाल होंगे। जब मैं टी.वी. बनूँगा तो पापा ऑफिस से आने के बाद थके होने के बावजूद मेरे साथ बैठेंगे। मम्मी को जब तनाव होगा तो वे मुझे डाँटेंगी नहीं बल्कि मेरे साथ रहना चाहेंगी। मेरे बड़े भाई - बहनों के बीच मेरे पास रहने के लिए झगड़ा होगा। यहाँ तक कि जब टीवी बंद रहेगा तब भी उसकी अच्छी तरह देखभाल होगी, और हाँ, टीवी के रूप में मैं सबको खुशी भी दे सकूँगा। यह सब सुनने के बाद पति के मुँह से यही निकला, हे भगवान ! बेचारा बच्चा ! उसके माँ - बाप तो उस पर जरा भी ध्यान नहीं देते। टीचर (पत्नी) आँसू भरी आँखों से उसकी तरफ देखकर बोली, जानते हो यह बच्चा कौन है ?



हमारा अपना बच्चा ----- हमारा छोटू !

"सोचिए कहीं यह ममता की आस में निराश बच्चा आपका अपना बच्चा तो नहीं।" ♦



## माँ का प्यार

प्रीति मणि दास  
सुपुत्री-रेखा मेधि दास  
( एम.टी.एस ) ( ले.व.ह. )

माँ की गोद में सर रखकर सोने से,  
ऐसा लगता है जैसे पुरा जन्नत पाया हो।  
जैसे किसी खुला आसमान ने,  
मुहब्बत बरसाया हो।  
मां हमें चाँद-तारों से चुन-चुन के  
खुशियों का चादर ओढ़ाती है,  
मुश्किल वक्त में भी हमारा साथ देती है,  
हे प्रभु अब दुआ है, तुमसे यहीं,  
मुझसे दूर उनको ले जाना नहीं,  
क्योंकि, इस जन्नत से भी प्यारी,  
माँ है मेरी।♦



जीवन में सफल होने के लिए आपको दो चीजें चाहिएं – अनभिज्ञता और आत्मविश्वास ।

मार्क ट्वैन

सभी के साथ विनम्र रहे, पर कुछ ही के साथ अन्तरंग हों, और इन कुछ को अपना विश्वास देने से पहले अच्छी तरह परख लें ।

जार्ज वाशिंगटन

जिन लोगों ने हमें अपना पूर्ण विश्वास दिया है वो ये सोचते हैं कि उन्हें हमारे विश्वास का अधिकार है ।  
यह निष्कर्ष गलत है, उपहार कोई अधिकार नहीं प्रदान करता ।

फ्रेडरिक नीतजे

शब्दों में दयालुता विश्वास उत्पन्न करती है । विचारों में दयालुता प्रगाढ़ता उत्पन्न करती है ।  
बांटने में दयालुता प्रेम उत्पन्न करती है ।

लाओ जू



## जल का सदुपयोग

प्रशान्त मलिक ( डाटा एंट्री ऑपरेटर ) ( ले. व हक. )

जल जीवन है, जीवन जल में  
बुझों क्या रखा है कल में  
एक समस्या बढ़ी आ रही  
तेरे निकट जो हर एक पल में।  
सुबह-सुबह जब उठती अम्मा  
उसको कंधे में एक ही जिम्मा  
पंक्ति में लग बारी-बारी  
जल भरती धीमी-धीमी।  
उपयोग करो सब थोड़ा-थोड़ा  
उतना खर्चो जितना जोड़ा  
ज्यादा के नुकसान बड़े है  
धरती पर इंसान बड़े है।  
अगली पीढ़ी का भी सोचो  
उनके ख्वाबों को मत नोचो  
सोचो और पश्चाताप करो  
बोलो भगवान माफ करो।  
जल जीवन है, जीवन जल में  
यही दिखता है हमको कल में  
एक समस्या बढ़ी आ रही  
मेरे निकट जो हर एक पल में।♦





## मानवता

बेहा गुप्ता, लेख्यापरीक्षक

सीट खाली होते ही, एक फटी पुरानी साड़ी पहने महिला जिसके बाल बहुत अस्त व्यस्त से थे, बैठ गई। उसके बैठते ही उसके अगल- बगल के लोग जिसमें मैं भी शामिल थी, उपेक्षा तथा घृणा से मुँह बिचका लिया। उस निम्न स्तरीय मजदूर औरत का हमारे जैसे तथाकथित पढ़े - लिखे, समझदार, सभ्य लोगों के बीच बैठने से हमारे शान में आँच आ रही थी। उसका साँवला बदन हमारी गोरी चमड़ी की खूबसूरती को फीका कर रहा था। तभी अचानक एक औरत जिसके हाथ में दुधमुहाँ बच्चा था, सामने आकर खड़ी हो गयी। हमारे जैसे समझदार, पढ़े - लिखे लोगों में से किसी ने भी उठकर उसे जगह तक ना दी, पर वह गरीब जो दिनभर कहीं से मजदूरी कर लौट रही थी, उठकर तुरंत जगह दे दी। उस गरीब की औकात भले ही आर्थिक दृष्टि से तुच्छ थी, पर मानवता के पैमाने पर हमारा नामो निशान कहीं ना था।♦



## मानव धर्म

नीहाल लोध, सहायक लेखा अधिकारी

आओ आओ हम लहराए  
ध्वजा मानवता का  
आओ आओ हम रोके,  
युद्ध धर्म का,  
संघर्ष जात-पात, रंग भेद का।  
रंगली आज चोली  
खून से,  
रूक गई आज बोली भय से,  
भूल गए दास्ताँ हम प्यार के।  
ऊजड़े घर राम, रहीम  
और पिटर का,  
चारो ओर सिर्फ  
सन्नाटा ही सन्नाटा।  
आओ आओ हम रोके  
युद्ध धर्म का,  
संघर्ष जात-पात, रंग भेद का।  
आओ आओ हम लहराए  
ध्वजा मानवता का।  
छोड़ो कहानी नफ़रत की  
बढ़ाओं हाथ मुहब्बत की  
अपना लो राह शांति की।  
मुहब्बत की राह से  
अब हम चलेंगे।  
धर्म के नाम से  
अब न मरेंगे।  
भुलाकर ये भेद भाव  
हम सब जिएं।  
आओ आओ हम रोके  
युद्ध धर्म का,  
संघर्ष जात-पात, रंग भेद का।  
आओ आओ हम लहराए  
ध्वजा मानवता का।♦



## एक गाँव का बुढ़ा

कुमारी देबोन्मिता राय  
सुपुत्री श्री देबाशीष राय, स.ले.अ

एक दिन एक मैदान में कुछ बच्चें खेल रहे थे। पास ही एक झोपड़ी में एक बुढ़ा आदमी रहता था, वह बच्चों के हँसने, रोने, गाने आदि की आवाज सुनकर कहा कि आज इतने बच्चें कैसे आ गए। शायद भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली, वह बुढ़ा आदमी झोपड़ी से बाहर जब निकला तब वह सारे बच्चें दोड़ते हुए उनके पास आए और कहने लगे माफ करें पर हम लोग क्या करें यहाँ से कुछ दूर पर हमारे खेलने का मैदान है, पर वहाँ सरकार ने शहरी लोगों के लिए बड़ी-बड़ी इमारतों का निर्माण कार्य चला रहा है। इसलिए हम यहा आ गए। बुढ़े आदमी ने कहा ठीक है तुम लोग यहा खेल सकते हो पर सरकार ने यह ठीक नहीं किया। चलो मुझे उनके पास ले जाओ जो यह कार्य कर रहे है। जब वे वहाँ पहुचें तो उन्होंने कहा, आप बच्चें के मैदान में इमारत क्यों बनवा रहे है। वहाँ पाठशाला बनवानी चाहिए। सरकारी कर्मचारी ने कहा- नहीं, बच्चों को बड़े होने पर जो खेती में काम हमने किया वही कठिन काम बच्चें करेंगे यह सुनकर सरकार ने कहा की हाँ बच्चे तो यही करेंगे। शहर के लोगों के लिए घर नहीं है। जब शहर के लोगों के रहने का घर बन जाएगा तब मुझे अगर कोई खाली मैदान मिले तो वही पाठशाला बनवाने की कोशिश करूंगा। वह बुढ़ा आदमी पुछा कब। सरकार कहे करीब बारह साल बाद। बुढ़ा आदमी कहे, इतने समय बाद तब शायद बच्चें बहुत बड़े हो जाएंगे। सरकार ने कहा तो में और कुछ नही कर पाऊँगा। बुढ़ा आदमी ने कहा- नहीं, आप अभी बना जाइए। मेरे जाने के बाद मेरे झोपड़ी के पास मैदान में आप बच्चों के लिए पाठशाला बनवाइए। सरकार ने कहा- नहीं, अभी मैं ऐसा नहीं कर सकूँगा, अब तुम मुझे परेशान मत करो और चले जाओ वापस मत आना। फिर वे चले गए। कुछ दिन बाद वह बच्चे आना बंद कर दिया और वह बुढ़ा आदमी भी बहुत बीमार पड़ गया। कुछ दिन बाद वे गुजर गए। सब को यह देखकर बहुत बुरा लगा और तभी सरकार ने फैसला लिया की वे आज से बच्चों के पढ़ने के लिए पाठशाला बनवाएंगे और बच्चो ने फैसला लिया की वे बहुत मेहनत करेंगे और उस बुढ़ा आदमी और अपने गाँव का नाम रोशन करेंगे। ♦



## भगवान का वादा

अनिता देवी

पन्ती श्री बसकीत राय, लेखाकार

मेरे मार्ग पर पैर रख कर तो देख,  
 तेरे सब मार्ग न खोल दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए खर्च करके तो देख,  
 कुबेर के भण्डार न खोल दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए अच्छे वचन सुन कर तो देख,  
 कृपा न बरसा दूँ तो कहना।  
 मेरी तरफ आकर तो देख,  
 तेरा ध्यान न रखूँ तो कहना।  
 मेरी बातें लोगों से करके तो देख,  
 तुझे मूल्यवान न बना दूँ तो कहना।  
 मेरे चरित्रों का मनन करके तो देख,  
 ज्ञान के मोती तुझमें न भर दूँ तो कहना।  
 मुझे अपना मददगार बनाके तो देख,  
 तुझे सबकी गुलामी से न छुड़ा दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए आँसू बहा कर तो देख,  
 तेरे जीवन में आनंद के सागर न बहा दूँ तो कहना।  
 मेरे लिए कुछ बन के तो देख,  
 तुझे कीमती न बना दूँ तो कहना।  
 मेरे मार्ग पर निकल के तो देख,  
 तुझे शांतिदूत न बना दूँ तो कहना।  
 स्वयं को मुझ पर न्योछावर करके तो देख,  
 तुझे मशहूर न करा दूँ तो कहना।  
 तू मेरा बनके तो देख,  
 हर एक को तेरा न बना दूँ तो कहना।♦





## ऊँची उड़ान मेरी पहचान

फिरोज, लेखापरीक्षक

बुझी हुई शमां जला सकता हूँ,  
भँवर फँसी कश्ती किनारे लगा सकता हूँ ।

मायूसी नहीं मुझे अपनी जिन्दगी से,  
खुद की तकदीर बना सकता हूँ ।

अगर मौका मिला किस्मत बनाने का,  
खुद को बुलन्दी पर ला सकता हूँ ।

मेरे हौंसले है कितने बुलन्द,  
वक्त आने दो बता सकता हूँ ।

ख्वाब कभी जो देखे थे पूरे न हुए,  
वही सपने पूरे करके दिखा सकता हूँ ।

रोड़े बनकर राहों में आए चाहे जितने,  
दम रखता हूँ ठोकर लगा सकता हूँ ।♦

हर वो अनुभव जिसमे आप भय का सामना करते हैं, वो आपकी शक्ति,  
साहस और आत्मविश्वास को बढ़ता है ।

एलेनोर रूजवेल्ट

साहस भय और आत्मविश्वास के बीच का जरिया है ।

अरस्तु

स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है । संतोष सबसे बड़ा खजाना है ।  
आत्म -विश्वास सबसे बड़ा मित्र है ।

लाओ जू



## प्रजातंत्र की दुर्दशा

कुमार करुणेशम (लेखाकार)

यँ तो सबसे अच्छा है प्रजातंत्र सरकार  
 फिर भी भारत देश हमारा बना पड़ा लाचार।  
 बेरोजगारी, भ्रष्टाचारी और मंहगाई में जीना है दुश्वार,  
 देश को लूट कर लोग मना रहें त्योहार।  
 पाँच साल में ये जनता को दिखते हैं एक बार,  
 लेकिन ये जनमानस की भावनाओं से खेलते हैं बार-बार।  
 जात धर्म के नाम पर लड़ाकर बढ़ाते हैं तकरार,  
 अपनी कुर्सी बचाने के खतिर रहते हैं बेकरार।  
 समस्या से निजात दिलाने का करते हैं ये करार,  
 जीत जाने के बाद बढ़ाते अपने पैसों का कारोबार।  
 आज देश का हर बच्चा है जन्म से कर्जदार,  
 गरीबों और अशिक्षा को बना कर ये हथियार।  
 भोली भाली जनता पर कर रहें ये अत्याचार,  
 आओ हम सब मिलकर चुने एक ऐसी सरकार,  
 जो सबके दुखों को दूर हो करता और बढ़ाये लोगो में प्यार।♦

हमें लगातार समस्याओं को हल करने का प्रयास करते रहना चाहिए, एक-एक कर के,  
 चरणबद्ध तरीके से, यदि बहरोसे और सहयोह के आधार पर नहीं तो कम से कम आपसी  
 सहनशीलता और निजी-स्वार्थ के लिए. - **लेस्टर बी. पीयर्सन**



## राष्ट्रभाषा का महत्व

अनुष्का सरकार  
झुपुत्री बनानी सरकार (व. लेखाकार)

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा हुआ करती है। स्वतंत्र राष्ट्र की पहचान का एक माध्यम उसकी अपनी भाषा का होना माना जाता है। जिस राष्ट्र की अपनी कोई भाषा नहीं होती उसका कोई साहित्य भी नहीं हुआ करता। संस्कृति भी सुरक्षित नहीं रह पाती। ऐसे राष्ट्र को दरिद्र और हीन समझा जाता है। हर समझदार मानता है कि सर्वव्यापकता राष्ट्रभाषा की मुख्य विशेषता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इस भाषा में सरलता, नियमबद्धता, व्यापकता आदि वे सभी गुण हैं जो एक राष्ट्रभाषा में होनी चाहिए। जो भाषा सीखने में जितनी सरल है उतनी ही लोकप्रिय है। हिन्दी भाषा भाषी की संख्या देश में सबसे अधिक है। यही कारण है कि संस्कृत के बाद जन्मी भाषाओं का काल समाप्त होने के बाद मध्यकाल में आकर जिस भाषा को सबसे अधिक महत्व मिल सका वह हिन्दी ही है। उस काल में भी इस भाषा को पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक सभी जगह समान रूप से समझा जाता था। इतना ही नहीं ब्रिटिश शासनकाल में जब देश स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा था, तभी राष्ट्रपिता गाँधी के प्रयत्नों से सारे देश ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानकर प्रचार करना भी आरंभ कर दिया था। आज भी हिन्दी भाषा देश के किसी भी कोने में काम चलायी जा सकती है। हमें हमारी राष्ट्रभाषा को सम्मान देना चाहिए जो हमारी देश की उन्नति को लिए सहायक होगी, अन्यथा भारत का विकासित देशों की पंक्ति में आने की बात स्वप्न बनकर रह जाएगी।♦

आशावादिता वो विश्वास है जो उपलब्धि की तरफ ले जाती है। बिना आशा और विश्वास के कुछ भी नहीं किया जा सकता।

हेलेन केलर

आत्मविश्वास संक्रामक है और इसकी कमी भी।

विन्से लोम्बार्डी



## हिन्दी और हम

पूजा छेत्री  
सुपुत्री:-गोरे बहादुर छेत्री,  
रिकार्ड कीपर ( ले.प. )

हिन्दी है तो भारत है ।  
भारत है हिन्दी है ॥

हिन्दी भारत की शान है ।  
हमारे देश की जान है ॥

हिन्दी हमारे भारत की ।  
माथे की है बिन्दी ॥

अगर हमने हिन्दी को नहीं माना अपना ।  
तो बिखर जाएगा इस देश का सपना ॥

एक दिन हिन्दी बनेगा जन - जन की भाषा ।  
यही है हम भारतवासियों की आशा ॥

आओं हम सब मिलकर हिन्दी को अपनाएँ ।  
इस सुन्दर भारत को अति सुन्दर बनाएँ ॥♦

दरअसल , लोगों का विश्वास पैसे से अधिक मूल्यवान है ।

कार्टर जी. वुड्सन

दूसरे की अच्छाई में यकीन होना खुद में अच्छाई होने का एक अच्छा प्रमाण है ।

मिशेल डी.मोंटेगने

चाहे आप छोटी या बड़ी जगह से हों , आपकी सफलता आपके आत्मविश्वास और दृढ़ता से निर्धारित होती है ।

मिशेल ओबामा





## हालात

बिचा यादव  
पत्नि अमित यादव  
( डाटा एंट्री ऑपरेटर )  
( ले व ह )

एक दिन बैठे सोच रहा था  
खुद से बातें पूछ रहा था,  
क्या कर पाया मैं जीवन में  
खुद का जीवन खोज रहा था।

हालातों की करें न बातें  
जाग-जाग कर काटी रातें,  
खुद का ही विश्वास बड़ा  
झुटे हैं सब रिश्ते नाते।

फटे-पुराने मेरे कपड़े  
हालातो संग मेरे लफड़े  
दो वक्त की रोटी मांगी  
हर दम मिलते सबसे झगड़े।



घमंड करोगे गिर जाओगे  
हालातों से चिर जाओगे  
खो दिया जितना खो बैठे हो  
हिम्मत रखो फिर पाओगे।

गौरव और सम्मान बढ़ा है  
हालातों ने जो जकड़ा है,  
उम्मीदों का दामन थामों  
अभी तो सारा जीवन पड़ा है।♦



## मनुष्य- धर्म

शम्भु कुमार नाथ  
सहायक लेखा अधिकारी

हम धरती के श्रेष्ठ जीव हैं। श्रेष्ठता के नाते हमारा दायित्व भी अधिक है। हम जीव कुल ओर धरती के श्रेष्ठ हैं। सोचिए हमारा दायित्व कितना बड़ा है। मनुष्य का जीवन मुलतः आत्मकेन्द्रित है। आत्मकेन्द्रित मानव अपनी प्रतिष्ठा और प्रगति के लिए काम करता है। कर्म ही धर्म है। ऐसा काम हम न करें जो मानव की श्रेष्ठता को हानि पहुंचाएं।

आत्मकेन्द्रित मानव काम करता है, अपने स्वार्थ के लिए। लेकिन निःस्वार्थ काम करना मानव का महत्व है। क्रोध, अहंकार, अज्ञानता और आलस्य जैसे अवगुण मानव को अवदमित करता है। सेवा, निष्ठा और समर्पण जैसे सदगुण मानव को आगे बढ़ाता है।

सदगुण क्या है, अवगुण क्या है और अपनाने के लिये सुशिक्षा और ईश्वर का प्यारा होना चाहिए। सुशिक्षा आता है अपने घर से और राष्ट्र से। ईश्वर का प्यार पाने के लिए अपना कर्म और धर्म ठीक होना चाहिए। शिक्षा आदमी को ज्ञानी और विनयी बनाता है। धर्म आदमी को निर्मल और पथ दिखाता है। धर्म मार्ग दर्शन देता है।

श्रेष्ठ है ज्ञान, ज्ञान से बड़ा है निष्ठा, कर्तव्य। कर्तव्य निष्ठा ध्यान है जिसे हम साधना कहते हैं। उसे ध्यान से बड़ा है समर्पण है। मनुष्य श्रेष्ठ का मूल है, ज्ञानी है, अज्ञानी आदमी पशु तुल्य है।

आत्मकेन्द्रित होने के नाते मनुष्य का ज्ञान बढ़ रहा है। परन्तु सदगुण घट रहा है। धन बढ़ रहा है, परन्तु मानवता सिमट रही है। परिणाम स्वरूप मानव सुख, शांति के बजाय दुःख और अशांति की आंधी से निपट रहा है। जीव श्रेष्ठ की श्रेष्ठता लुप्त हो रही है। मानव धर्म जैसे मानवता खो रहा है। इसलिए समर्पण धर्म की जरूरत है। समर्पण के बिना जीवन नीरस हो जाता है। समर्पण आदमी को महान बनाता है। जीवन में धर्म का मूल है समर्पण। किसी धर्माचार का वाद श्रद्दालु ने किसी फल खाना त्याग करते हैं, वह भी समर्पण धर्म का एक आधार है। क्योंकि पूजा, आराधना से समर्पण से पुण्य होता है।

मानव अपने शरीर को जैसा दुःख नहीं देना चाहता हैं, धरती अर्थात प्रकृति को भी ऐसे ही दुःख नहीं देना चाहिए। क्योंकि मनुष्य का शरीर प्रकृति है। मनुष्य का आत्मा-परमात्मा का अंश है। अंतरात्मा भगवान है। भगवान पुरुषोत्तम और उनका शरीर प्रकृति है। ब्रह्माण्ड भगवान का शरीर है। तब सोचिए प्रकृति के हानि अर्थात भगवान की शरीर पर आघात।

प्रकृति उदार है, तो हम क्यों अनुदार बनें। ईश्वर महान है तो हम क्यों दानव बने ? हमारा अंतरात्मा पुरुष है, तो हम क्यों पुरुषार्थ न करें ? इसलिये जो जिस क्षेत्र में श्रेष्ठ है, उसे अपनी बढ़ाये श्रेष्ठता सटिक रूप से अपनाना चाहिए। ताकि अपने जीवन के साथ समाज और देश आगे बढ़े। इसलिए राष्ट्र का दायित्व अधिक से अधिक है। कर्ता के अनुसार कर्म होता है। कर्ता की सटिक जिम्मेदारी भगवान को प्यारी है।♦



## जीये तो कैसे जीये

अन्नोषा देब  
पिता- अजय देब,  
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

जिदंगी एक अमूल्य धन है और भगवान के द्वारा दिए गए इस धन का हमें भरपूर फायदा उठाना चाहिए। लेकिन आज हर व्यक्ति इतना लोभी और लालची हो गया है, कि वह अपने जीवन से कभी भी संतुष्ट नहीं होता या फिर जीवन में आने वाली कठिनाइयों से हारकर अपनी जिदंगी से निराश हो बैठता है, पर क्या इसे ही जिदंगी कहते हैं ? अपने जीवन को खुशहाल या दुखी बनाना हमपर निर्भर करता है। हमारे पास जो कुछ भी है, अगर उसी में हम संतुष्टि प्राप्त करते हैं, तो हम खुश रहेंगे, लेकिन जरूरत से ज्यादा पाने की लालसा हमें जीवन में असंतुष्ट कर देती है और जो लोग मुश्किलों के सामने अपने घुटने टेक देते हैं, उन्हें निराशा प्राप्त होती है। हमें अपने पूरे जीवनकाल में हँसते-मुस्कुराते रहना चाहिए और दूसरो को भी खुश रखना चाहिए। हमें हर मुश्किलो का सामना करते हुए सफलता की सीढ़ियों को चढ़ते जाना चाहिए। हमें हर मुश्किलों और कठिनाइयों से परेशान होकर अपने जीवन को कोसना नहीं चाहिए, इसी को जिदंगी कहते हैं, अपने जीवन के हर एक पल को खुशी से जीना चाहिए क्योंकि पता नहीं कब हमारी खूबसूरत जिदंगी का अंत हो जाए, इसीलिए हमें अपने जीवन को उत्साह और उमंग के साथ जीना चाहिए। हमें परिश्रम करना चाहिए और तभी सफलता हमारे कदम चूमेंगी, क्योंकि जिदंगी एक बार ही मिलनी है, इसीलिए जिदंगी को जीये तो शान से जीयें। ♦

अत्यधिक भरोसा खतरे को जन्म देता है।

टायरा बैंक्स

आत्मविश्वास के साथ काम करना सबसे अच्छा है, भले ही आपके पास उसके होने का कितना कम अधिकार ही क्यों ना हो।

लीलियन हेलिमें



## मिट्टी का खिलौना (मनुष्य)

संदीप, डाटा एंट्री ऑपरेटर  
(लेवह)

मिट्टी का मैं बना खिलौना  
जीवन जैसे स्वपन सलौना,  
खुशियों में मेरा हँसना देखों  
तकलीफों में देखो रोना।  
रूकना सीखा चलना सीखा  
हालातों से लड़ना सीखा,  
बुद्धि ओर ताकत के बल पर  
दुनिया में फिर उड़ना सीखा।  
जन्म से लेकर मरने तक  
शुरु से लेकर करने तक,  
फिकर यही बस होना क्या है  
बात-बात पर रोना क्या है।  
जाग-जाग कर रातों को  
मैं समझा सबकी बातों को,  
अंधा है विश्वास यहाँ पर  
कौन भला फिर खास यहाँ पर।  
पत्थर की सब पूजा करते  
ये तेरा ये मेरा करते,  
कौन भला क्या लाया था और  
कौन किधर ले जाएगा,  
जिस मिट्टी का बना खिलौना  
उसमें ही मिल जाएँगा।♦



## बहुत याद आती है

चंद्रहास मनोज (लेखाकार)

देश है तो जनता है, जनता है तो नेता हैं  
नेता है तो गाड़ी है, गाड़ी है तो सड़के हैं  
सड़के है तो गढ़े हैं, गढ़े हैं तो उनको भरने के वादे हैं  
वादे करके उनकी सुधि कौन लेता है, वादा खिलाफी है तो नेता हैं।

सड़के हैं तो भीड़ हैं, भीड़ हैं तो ट्रैफिक जाम हैं  
ट्रैफिक जाम है तो धुँआ है, धुँआ है तो बीमारी हैं  
बीमारी हैं तो अस्पताल हैं, अस्पताल है तो डॉक्टर हैं  
डॉक्टर हैं तो नर्स हैं, नर्स हैं यानि की लड़कियाँ हैं  
लड़कियाँ हैं तो छेड़खानी हैं, साथ में चलती मनमानी हैं  
मनमानी जो करते हैं, नेता के लड़के हैं



नेता के लड़के हैं तो दबदबा हैं, दबदबा है तो नेता हैं।  
मनमानी हैं तो बलात्कार हैं, बलात्कार हैं तो पुलिस हैं  
पुलिस हैं तो चोर हैं, चोर हैं तो पैसा है  
पैसा है तो बिल्डिंग हैं, बिल्डिंग हैं तो बिल्डर हैं  
बिल्डर हैं तो जमीन के सौदे हैं, जमीन के सौदे हैं तो घोटाले हैं  
घोटाले हैं तो नेता है।

घोटाले हैं, तो घोटाला करने वाले हैं  
घोटाला करने वाले हैं, तो धंधे काली हैं  
धंधे काले हैं तो छानबीन वाले हैं, छानबीन यानि की सरकारी मुलाजिम हैं  
सरकारी मुलाजिम हैं तो भ्रष्टाचार हैं, भ्रष्टाचार हैं तो नेता हैं।  
सरकारी मुलाजिम हैं, तो कामचोरी हैं, तो हड़ताल है  
हड़ताल हैं तो धरना प्रदर्शन हैं, धरना प्रदर्शन हैं तो तोड़-फोड़ हैं  
तोड़-फोड़ है तो समाचार है, समाचार है तो मीडिया है  
मीडिया हैं तो नेता है।

धरना-प्रदर्शन हैं तो बाजार बंद हैं, बाजार बंद हैं तो लोग परेशान हैं  
परेशान लोग जनता हैं, जनता है तो वोट हैं,  
वोट हैं तो चुनाव है, चुनाव है तो ताकत प्रदर्शन है  
ताकत प्रदर्शन हैं तो बुथ-केपचरिंग हैं, बुथ-केपचरिंग हैं, तो अपराध हैं।  
इसलिए जब कभी वादा खिलाफी, दबदबे, घोटाले, भ्रष्टाचार, मीडिया या अपराध की बात आती  
है....हैं नेता, हमको तेरी बहुत याद आती है।♦







संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 के दौरान कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण।

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 में आए निर्णायकगण एवं प्रतिभागियों का एक दृश्य।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 में भाग लेते हुए कर्मचारी के बच्चों का एक दृश्य

